

قرآن مجید

لफ़ज़ी तरजुमा

عَمَّ

पारा - 30

eParah

آيَاتُهَا: 40

سُورَةُ النَّبَا مَكِّيَّةٌ 80

رُكُوعَاتُهَا: 2

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

عَمَّ	يَتَسَاءَلُونَ ① ج	عَنِ النَّبَا	الْعَظِيمِ ② لا	الَّذِي			
किस चीज़ के बारे में	वो आपस में सवाल कर रहे हैं	उस ख़बर के बारे में	जो बहुत बड़ी है	वो जो			
هُمْ	فِيهِ	مُخْتَلِفُونَ ③ ط	كَلَّا	سَيَعْلَمُونَ ④ لا	ثُمَّ	كَلَّا	
वो	उसमें	इख़्तिलाफ़ करने वाले हैं	हरगिज़ नहीं	अनक़रीब वो जान लेंगे	फिर	हरगिज़ नहीं	
سَيَعْلَمُونَ ⑤	أَلَمْ	نَجْعَلِ	الْأَرْضَ	مِهْدًا ⑥ لا	وَالْجِبَالَ		
अनक़रीब वो जान लेंगे	क्या नहीं	हमने बनाया	ज़मीन को	बिछौना	और पहाड़ों को		
أَوْتَادًا ⑦ ط	وَخَلَقْنَاهُمْ	أَزْوَاجًا ⑧ لا	وَجَعَلْنَا	نَوْمَكُمْ	سُبَاتًا ⑨ لا		
मेखें	और पैदा किया हमने तुम्हें	जोड़ा-जोड़ा	और बनाया हमने	तुम्हारी नींद को	आराम का ज़रिया		
وَجَعَلْنَا	الَّيْلَ	لِبَاسًا ⑩ لا	وَجَعَلْنَا	النَّهَارَ	مَعَاشًا ⑪ ص	وَبَنَيْنَا	
और बनाया हमने	रात को	लिबास	और बनाया हमने	दिन को	मआश का वक़्त	और बनाए हमने	
فَوْقَكُمْ	سَبْعًا	شِدَادًا ⑫ لا	وَجَعَلْنَا	سِرَاجًا	وَهَاجًا ⑬ ط	وَأَنْزَلْنَا	
ऊपर तुम्हारे	सात	मज़बूत (आसमान)	और बनाया हमने	एक चिराग़	ख़ूब रौशन	और उतारा हमने	
مِنَ الْمُعْصِرَاتِ	مَاءً	ثَجَّاجًا ⑭ لا	لِنُخْرِجَ	بِهِ	حَبًّا	وَنَبَاتًا ⑮ لا	
बदलियों से	पानी	ख़ूब बरसने वाला	ताकि हम निकालें	उससे	ग़ल्ला	और नबतात	
وَجِئَتْ	الْفَافَا ⑯ ط	إِنَّ	يَوْمَ	الْفَصْلِ	كَانَ	مِيقَاتًا ⑰ لا	يَوْمَ
और बा़ा़ा़त	घने	बेशक	दिन	फ़ैसले का	है	एक मुक़रर वक़्त	जिस दिन
يُنْفَخُ	فِي الصُّورِ	فَتَاتُونَ	أَفْوَاجًا ⑱ لا	وَفُتِحَتْ	السَّهَاءُ		
फूँख दिया जाएगा	सूर में	तो तुम आओगे	फ़ौज़ दर फ़ौज़	और खोल दिया जाएगा	आसमान		

فَكَانَتْ	أَبْوَابًا 19	وَسُيِّرَتْ	الْجِبَالُ	فَكَانَتْ	سَرَابًا 20	إِنَّ
तो वो हो जाएगा	दरवाज़े-दरवाज़े	और चला दिए जाएंगे	पहाड़	तो वो हो जाएंगे	सराब	बेशक
جَهَنَّمَ	كَانَتْ	مِرْصَادًا 21	لِلطَّاغِينَ	مَا بَأ 22	لُبِثِينَ	فِيهَا
जहन्नम	है	एक घात	सरकशों के लिए	ठिकाना	हमेशा रहने वाले हैं	उसमें
أَحْقَابًا 23	لَا يَذُوقُونَ	فِيهَا	بَرْدًا	وَلَا	شَرَابًا 24	إِلَّا حَيْبًا
मुद्दतों	ना वो चखेंगे	उसमें	कोई ठंडक	और ना	कोई पीने की चीज़	मगर
وَعَسَاقًا 25	جَزَاءً	وَفَاقًا 26	إِنَّهُمْ	كَانُوا	لَا يَرْجُونَ	حِسَابًا 27
और बहती पीप	बदला है	पूरा-पूरा	बेशक वो	थे वो	ना वो उम्मीद रखते	हिसाब की
وَكَذَّبُوا	بِآيَاتِنَا	كَذَّابًا 28	وَكُلَّ شَيْءٍ	أَحْصَيْنَاهُ	كِتَابًا 29	
और उन्होंने झुठलाया	हमारी आयात को	बहुत झुठलाना	और हर	चीज़ को	शुमार कर रखा है हमने उसे	एक किताब में
فَذُوقُوا	فَلَنْ	نَزِيدَكُمْ	إِلَّا	عَذَابًا 30	إِنَّ	لِلْمُتَّقِينَ
पस चखो	पस हरगिज़ ना	हम ज़्यादा देंगे तुम्हें	मगर	अज़ाब	बेशक	मुत्तक़ी लोगों के लिए
مَفَازًا 31	حَدَائِقَ	وَأَعْنَابًا 32	وَكَوَاعِبَ	أَثْرَابًا 33	وَكَاَسًا	
कामयाबी है	बागात	और अंगूर हैं	और उभरी छातियों वालीयाँ	हमउम्र	और जाम	
دِهَاقًا 34	لَا يَسْمَعُونَ	فِيهَا	لَعْوًا	وَلَا	كَذِبًا 35	جَزَاءً
छलकते हुए	ना वो सुनेंगे	उसमें	कोई लगव	और ना	कोई झूठ	बदला है
مِّن رَّبِّكَ	عَطَاءً	حِسَابًا 36	رَّبِّ	السَّمَوَاتِ	وَالْأَرْضِ	وَمَا
आपके रब की तरफ़ से	अतिया	किफ़ायत करने वाला/काफ़ी	जो रब है	आसमानों	और ज़मीन का	और जो
بَيْنَهُمَا	الرَّحْمَنِ	لَا يَمْلِكُونَ	مِنْهُ	خَطَابًا 37	يَوْمَ	يَقُومُ
दर्मियान है इन दोनों के	जो रहमान है	ना वो मालिक होंगे	उससे	बात करने के	जिस दिन	खड़े होंगे

الرُّوحُ	وَالْمَلَكَةُ	صَفًّا	لَّا يَتَكَلَّمُونَ	إِلَّا	مَنْ	أَذِنَ
रूहुल अमीन	और फ़रिश्ते	सफ़ दर सफ़	ना वो कलाम कर सकेंगे	मगर	वो जो	इजाज़त दे

لَهُ	الرَّحْمَنُ	وَقَالَ	صَوَابًا 38	ذَلِكَ	الْيَوْمُ	الْحَقُّ	فَمَنْ
उसको	रहमान	और वो कहे	बात दुरुस्त	ये है	दिन	बरहक़	पस जो कोई

شَاءَ	اتَّخَذَ	إِلَىٰ رَبِّهِ	مَا بَأْسًا 39	إِنَّا	أَنْذَرْنَاكُمْ	عَذَابًا
चाहे	बना ले	तरफ़ अपने रब के	ठिकाना	बेशक हम	डरा दिया है हमने तुम्हें	अज़ाब से

قَرِيبًا 40	يَوْمَ	يَنْظُرُ	الْبَرُّ	مَا	قَدَّامَتْ	يَدَاهُ
क़रीब के	जिस दिन	देखेगा	इंसान	जो	आगे भेजा	उसके दोनों हाथों ने

وَيَقُولُ	الْكَافِرُ	يَلِيَّتَنِي	كُنْتُ	تَرْبًا 40
और कहेगा	काफ़िर	ऐ काश कि मैं	होता मैं	मिट्टी

آيَاتُهَا: 46	سُورَةُ النُّزُعَاتِ مَكِّيَّةٌ 81	رُكُوعَاتُهَا: 2
---------------	------------------------------------	------------------

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

وَالنُّزُعَاتِ	غَرَقًا 1	وَالنَّشِطِ	نَشْطًا 2
क़सम है (उन फ़रिश्तों की) जो खींचने वाले हैं	डूब कर	और जो आसानी से निकालने वाले हैं	आसानी से निकालना

وَالسَّيِّئَاتِ	سَبْحًا 3	فَالسَّيِّئَاتِ	سَبْقًا 4	فَالْمُدَبِّرَاتِ
और जो तैरने वाले हैं	तेज़ी से तैरना	फिर जो सबक़त करने वाले हैं	सबक़त करना	फिर जो तदबीर करने वाले हैं

أَمْرًا 5	يَوْمَ	تَرْجُفُ	الرَّاجِفَةُ 6	تَتَّبِعُهَا	الرَّادِفَةُ 7
किसी काम की	जिस दिन	काँपेगी	काँपने वाली	पीछे आएगी उसके	पीछे आने वाली

قُلُوبٌ	يَوْمَئِذٍ	وَاجِفَةٌ 8	أَبْصَارُهَا	خَاشِعَةٌ 9	يَقُولُونَ
कुछ दिल	उस दिन	धड़कने वाले होंगे	निगाहें उनकी	झुकी हुई होंगी	वो कहते हैं

عَإِنَّا	لَسَرُدُّوونَ	فِي الْحَافِرَةِ ١٠	عَإِذَا	كُنَّا	عِظَامًا
क्या बेशक हम	अलबत्ता फेरे जाने वाले हैं	पहली हालत में	क्या जब	होंगे हम	हड्डियां
نَخْرَةً ١١	قَالُوا	تِلْكَ	إِذَا	كَرَّةٌ	خَاسِرَةٌ ١٢
बोसीदा	उन्होंने कहा	ये	तब	वापसी है	खसारे की
زَجْرَةٌ	وَاحِدَةٌ ١٣	فَإِذَا	هُمْ	بِالسَّاهِرَةِ ١٤	هَلْ
डांट होगी	एक ही	तो अचानक	वो	मैदान में होंगे	क्या
مُوسَى ١٥	إِذَا	نَادَاهُ	رَبُّهُ	بِالْوَادِ الْمُقَدَّسِ	طُوى ١٦
मूसा की	जब	पुकारा उसे	उसके रब ने	सुक्रद्स वादी में	तुवा की
إِلَى فِرْعَوْنَ	إِنَّهُ	طَغَى ١٧	فَقُلْ	هَلْ	لَّكَ
तरफ़ फिरऔन के	बेशक वो	सरकश हो गया है	पस कहो	क्या है	तुझे (ख्वाहिश)
تَزَكَّى ١٨	وَأَهْدِيكَ	إِلَى رَبِّكَ	فَتَخْشَى ١٩	فَارَاهُ	الْأَيَّةَ
तू पाक हो जाए	और मैं रहनुमाई करू तेरी	तरफ़ तेरे रब के	फिर तू डरे	पस उसने दिखाई उसे	निशानी
الْكُبْرَى ٢٠	فَكَذَّبَ	وَعَصَى ٢١	ثُمَّ	أَدْبَرَ	يَسْغَى ٢٢
बहुत बड़ी	तो उसने झुठला दिया	और उसने नाफ़रमानी की	फिर	वो पलटा	कोशिश करते हुए
فَنَادَى ٢٣	فَقَالَ	أَنَا	رَبُّكُمْ	الْأَعْلَى ٢٤	فَاخْذَهُ
फिर उसने पुकारा	फिर उसने कहा	मैं	रब हूं तुम्हारा	सब से बुलंद	तो पकड़ लिया उसे
الْآخِرَةِ	وَالْأُولَى ٢٥	إِنَّ	فِي ذَلِكَ	لَعِبْرَةً	لِّسَنَ
आख़िरत	और दुनिया के	बेशक	इसमें	यक्रीनन इबरत है	उसके लिए जो
عَإِنْتُمْ	أَشَدُّ	خَلْقًا	أَمِ	السَّهَاءُ ٢٦	بِنَهَا ٢٧
क्या तुम	ज़्यादा सख़्त हो	तख़लीक़ में	या	आसमान	उसने बनाया उसे
				उसने बुलंद किया	उसकी छत को

وقف انهم

وقف انهم

ع 26
3

فَسَوَّيْهَا ²⁸	وَ أَغْطَشَ	لَيْلَهَا	وَ أَخْرَجَ	صُحَّهَا ²⁹	وَ الْأَرْضَ
फिर उसने दुरुस्त कर दिया उसे	और उसने तारीक किया	उसकी रात को	और उसने निकाला	उसकी धूप को	और ज़मीन को
بَعْدَ	ذَلِكَ	دَحْهَا ³⁰	أَخْرَجَ	مِنْهَا	مَاءَهَا
बाद	इसके	उसने फैला दिया उसे	उसने निकाला	उस से	पानी उसका
وَالْجِبَالِ	أَرْسَهَا ³²	مَتَاعًا	لَكُمْ	وَلَا نَعَامِكُمْ ³³	فَإِذَا
और पहाड़ों को	उसने गाड़ दिया उन्हें	फ़ायदे का सामान है	तुम्हारे लिए	और तुम्हारे मवेशियों के लिए	फिर जब
جَاءَتِ الطَّامَّةُ	الْكُبْرَى ³⁴	يَوْمَ	يَتَذَكَّرُ	الْإِنْسَانُ	مَا
आफ़त	बहुत बड़ी	उस दिन	याद करेगा	इन्सान	जो
وَبُرْزَتِ	الْجَحِيمُ	لِسَنٍ	يَرَى ³⁶	فَأَمَّا	مَنْ
और ज़ाहिर कर दी जाएगी	जहन्नम	उसके लिए जो	देखता है	तो रहा वो	जिसने
وَ أَثَرَ	الْحَيَوَةِ	الدُّنْيَا ³⁸	فَإِنَّ	الْجَحِيمَ	هِيَ
और उसने तरजीह दी	ज़िंदगी को	दुनिया की	तो बेशक	जहन्नम	वो ही
مَنْ خَافَ	مَقَامَ	رَبِّهِ	وَنَهَى	النَّفْسَ	عَنِ الْهَوَى ⁴⁰
वो जो	डरा	खड़े होने से	अपने रब के (सामने)	नफ़्स को	ख़्वाहिशात से
فَإِنَّ	الْجَنَّةَ	هِيَ	الْبَاوَى ⁴¹	يَسْأَلُونَكَ	عَنِ السَّاعَةِ
तो यकीनन	जन्नत	वो ही	ठिकाना है (उसका)	वो सवाल करते हैं आपसे	क्रयामत के बारे में
أَيَّانَ	مُرْسَهَا ⁴²	فِيمَ	أَنْتَ	مِنْ ذِكْرِهَا ⁴³	إِلَى رَبِّكَ
कब है	ठहरना उसका	किस (फ़िक्र) में हैं	आप	उसके ज़िक्र से	तरफ़ आपके रब के
مُنْتَهَاهَا ⁴⁴	إِنِّبَاً	أَنْتَ	مُنْذِرُ	مَنْ	يَخْشَاهَا ⁴⁵
इंतिहा है उसकी	बेशक	आप तो	डराने वाले हैं	उसे जो	डरता हो उससे
كَانَهُمْ					गोया कि वो

يَوْمَ	يَرُونَهَا	لَمْ	يَلْبَثُوا	إِلَّا	عَشِيَّةً	أَوْ	ضُحَاهَا	ع (46)
जिस दिन	वो देखेंगे उसे (तो कहेंगे)	नहीं	वो ठहरे	मगर	पिछला पहर	या	पहला पहर उसका	

آيَاتُهَا: 42	سُورَةُ عَبَسَ مَكِّيَّةٌ 24	رُكُوعُهَا: 1
---------------	------------------------------	---------------

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

عَبَسَ	وَتَوَلَّى ①	أَنْ	جَاءَهُ	الْأَعْمَى ②	وَمَا	يُدْرِيكَ
उसने तेवरी चढ़ाई	और उसने मुंह फेर लिया	कि	आया उसके पास	एक नाबीना	और क्या चीज़	बताए आपको

لَعَلَّهُ	يَرْزُقِي ③	أَوْ	يَذْكُرُهُ	فَتَنْفَعَهُ	الذِّكْرَى ④	أَمَّا	مَنْ
शायद कि वो	वो पाक हो जाता	या	वो नसीहत पकड़ता	तो फ़ायदा देती उसे	नसीहत	रहा	वो जो

اسْتَعْنَى ⑤	فَأَنْتَ	لَهُ	تَصَدَّى ⑥	وَمَا	عَلَيْكَ	إِلَّا	يَرْزُقِي ⑦
बेपरवाई करता है	तो आप	उसके लिए	आप तवज्जह करते हैं	हालाँकि नहीं	आप पर (ज़िम्मेदारी)	कि नहीं	वो पाक होता

وَأَمَّا	مَنْ	جَاءَكَ	يَسْئَلُ ⑧	وَهُوَ	يَخْشَى ⑨	فَأَنْتَ	عَنْهُ
और रहा	वो जो	आया है आपके पास	कोशिश करता हुआ	और वो	वो डरता है	तो आप	उस से

تَلَهَّى ⑩	كَلَّا	إِنَّهَا	تَذْكِرَةٌ ⑪	فَمَنْ	شَاءَ	ذِكْرَهُ ⑫
आप बेरुखी बरसे हैं	हरगिज़ नहीं	बेशक वो	एक नसीहत है	तो जो कोई	चाहे	नसीहत हासिल करे उससे

فِي صُحُفٍ	مُكْرَمَةٍ ⑬	مَرْفُوعَةٍ	مُطَهَّرَةٍ ⑭	بِأَيْدِي	سَفَرَةٍ ⑮
सहीफ़ों में है	इज़्ज़त दिए गए	बुलंद मर्तबा	निहायत पाकीज़ा	हाथों में है	लिखने वालों के

كِرَامٍ	بَرَرَةٍ ⑯	قُتِلَ	الْإِنْسَانُ	مَا أَكْفَرَهُ ⑰	مِنْ أَيْ شَيْءٍ	خَلَقَهُ ⑱
मोअज़्ज़िज़	नेकोकार	मारा जाए	इंसान	किस कद्र नाशुक्रा है वो	किस चीज़ से	उसने पैदा किया उसे

مِنْ نُطْفَةٍ ⑲	خَلَقَهُ	فَقَدَّارَهُ ⑲	ثُمَّ	السَّبِيلَ	يَسَّرَهُ ⑳
एक नुत्फ़े से	उसने पैदा किया उसे	फिर उसने तक्दीर मुक़र्रर की उसकी	फिर	रास्ता	उसने आसान किया उसका

ثُمَّ	أَمَاتَهُ	فَأَقْبَرَهُ ²¹	ثُمَّ	إِذَا شَاءَ	أَنْشَرَهُ ²²	كَلَّا	لَبَّا
फिर	उसने मौत दी उसे	फिर उसने कब्र दी उसे	फिर	जब	वो चाहेगा	वो उठा खड़ा करेगा उसे	हरगिज़ नहीं अभी तक नहीं
يَقْضِ	مَا	أَمْرَهُ ²³	فَلْيَنْظُرِ	الْإِنْسَانُ	إِلَى طَعَامِهِ ²⁴	أَنَا	
उसने पूरा किया	जो	उसने हुकम दिया था उसे	पस चाहिए कि देखे	इंसान	तरफ़ अपने खाने के	बेशक हम	
صَبَبْنَا	الْبَاءَ	صَبًّا ²⁵	ثُمَّ	شَقَقْنَا	الْأَرْضَ	شَقًّا ²⁶	فَانْبَتْنَا
उंडेला हमने	पानी	ख़ूब उंडेलना	फिर	फाड़ी हमने	ज़मीन	ख़ूब फाड़ना	फिर उगाया हमने
فِيهَا	حَبًّا ²⁷	وَعِنَبًا	وَقَضْبًا ²⁸	وَزَيْتُونًا	وَنَخْلًا ²⁹	وَحَدَائِقَ	
उसमें	ग़ल्ला	और अंगूर	और तरकारी	और ज़ैतून	और खजूर	और बाग़ात	
غُلْبًا ³⁰	وَفَاكِهَةً	وَأَبًّا ³¹	مَتَاعًا	لَكُمْ	وَلِإِنْعَامِكُمْ ³²		
घने	और फल	और चारा	फ़ायदे की चीज़ें हैं	तुम्हारे लिए	और तुम्हारे मवेशियों के लिए		
فَإِذَا	جَاءَتْ	الصَّاحَّةُ ³³	يَوْمَ	يَفِرُّ	الْبَرُّ	مِنْ أَخِيهِ ³⁴	
तो जब	आ जाएगी	कान बहरा कर देने वाली सख़्त आवाज़	उस दिन	भागेगा	इंसान	अपने भाई से	
وَأُمِّهِ	وَأَبِيهِ ³⁵	وَصَاحِبَتِهِ	وَبَنِيهِ ³⁶	لِكُلِّ	أَمْرٍ	مِنْهُمْ	
और अपनी मां से	और अपने बाप से	और अपनी बीवी से	और अपने बेटों से	बास्ते हर	शख्स के	उनमें से	
يَوْمَئِذٍ	شَأْنُ	يُغْنِيهِ ³⁷	وَجُوهٌ	يَوْمَئِذٍ	مُسْفِرَةٌ ³⁸		
उस दिन	ऐसी हालत होगी	जो बेपरवा कर देगी उसे	कुछ चेहरे	उस दिन	रौशन होंगे		
ضَاحِكَةً	مُسْتَبْشِرَةً ³⁹	وَوُجُوهٌ	يَوْمَئِذٍ	عَلَيْهَا	غَبْرَةٌ ⁴⁰		
हंसते होंगे	खुशख़बरी पाने वाले होंगे	और कुछ चेहरे	उस दिन	उन पर	गुबार होगा		
تَرْهَقُهَا	قَتَرَةٌ ⁴¹	أُولَئِكَ	هُمْ	الْكَفَرَةُ	الْفَجْرَةُ ⁴²		
छा रही होगी उन पर	स्याही	यही लोग हैं	वो	जो काफिर हैं	फ़ाजिर हैं		

وَإِذَا	كُورَتْ ①	وَإِذَا	النُّجُومُ	اِنْكَدَرَتْ ②	وَإِذَا
जब	लपेट दिया जाएगा	और जब	सितारे	बेनूर हो जाएंगे	और जब
الْجِبَالُ	سُيِّرَتْ ③	وَإِذَا	الْعِشَارُ	عُطِلَتْ ④	وَإِذَا
पहाड़	चला दिए जाएंगे	और जब	दस माह की हामिला ऊटनियां	बेकार छोड़ दी जाएंगी	और जब
حُشِرَتْ ⑤	وَإِذَا	الْبَحَارُ	سُجِّرَتْ ⑥	وَإِذَا	النَّفُوسُ
और जब	समुन्दर	भड़का दिए जाएंगे	और जब	जानें	जोड़ दी जाएंगी
وَإِذَا	الْمُوءَدَّةُ	سُيِّلَتْ ⑧	بِأَيِّ	ذَنْبٍ	قَتِلَتْ ⑨
और जब	ज़िन्दा गाढ़ी हुई लड़की	पूछी जाएगी	बवजह किस	गुनाह के	वो मारी गई
نُشِرَتْ ⑩	وَإِذَا	السَّهَاءُ	كُشِطَتْ ⑪	وَإِذَا	الْبَحِيمُ
और जब	आसमान	(उसकी) खाल उतार दी जाएगी	और जब	जहन्नम	भड़का दी जाएगी
وَإِذَا	الْجَنَّةُ	أُزْلِفَتْ ⑬	عَلِمَتْ	نَفْسٌ	مَّا
और जब	जन्नत	क़रीब ले आई जाएगी	जान लेगा	हर नफ़्स	जो
أَقْسِمُ	بِالْخُنُسِ ⑮	الْجَوَارِ	الْكُنُسِ ⑮	وَإِلَى	إِذَا
मैं क़सम खाता हूँ	पीछे हटने वाले	चलने वाले	छुप जाने वाले (सितारों की)	और रात की	जब
عَسَسَ ⑮	وَالصُّبْحُ	إِذَا	تَنَفَّسَ ⑮	إِنَّهُ	لَقَوْلُ
वो रुख़सत होती है	और सुबह की	जब	वो सांस लेती है	बेशक वो (क़ुरआन)	यक़ीनन क़ौल है
كَرِيمٌ ⑮	ذِي قُوَّةٍ	عِنْدَ	ذِي الْعَرْشِ	مَكِينٌ ⑮	مُّطَاعٌ
मोअज़्ज़िज़ का	जो कुव्वत वाला है	नज़दीक	अर्श वाले के	बुलंद मर्तबा है	इताअत किया जाता है

أَمِينٌ 21 ط	وَمَا صَاحِبُكُمْ	بِسَجُنٍ 22 ج	وَلَقَدْ رَآهُ	بِالْأُفُقِ
अमानतदार है	और नहीं	साथी तुम्हारा	कोई मजनून	और अलबत्ता तहकीक

الْبَيِّنِ 23 ج	وَمَا هُوَ	عَلَى الْغَيْبِ	بِضَنِينِ 24 ج	وَمَا هُوَ	بِقَوْلِ
खुले	और नहीं	वो	गैब पर	हरगिज़ बखील	और नहीं है

شَيْطَانِ	رَّجِيمٍ 25 ل	فَإِنَّ تَذْهَبُونَ 26 ط	إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ
शैतान	मरदूद का	फिर किधर	तुम जा रहे हो

لِّلْعَالَمِينَ 27 ل	لِسَنَاءٍ	مِّنْكُمْ	أَنْ يَّسْتَقِيمَ 28 ط	وَمَا
तमाम जहान वालों के लिए	उसके लिए जो	चाहे	तुम में से	ये कि

تَشَاءُونَ	إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ	رَبُّ الْعَالَمِينَ 29 ع
तुम चाहते	मगर	ये कि

آيَاتُهَا: 19	سُورَةُ الْإِنْفِطَارِ مَكِّيَّةٌ 82	رُكُوعُهَا: 1
---------------	--------------------------------------	---------------

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

إِذَا السَّمَاءُ انْفَطَرَتْ 1 ل	وَإِذَا الْكَوَاكِبُ انْتَثَرَتْ 2 ج	وَإِذَا الْبِحَارُ
जब	आसमान	फट जाएगा

فُجِّرَتْ 3 ج	وَإِذَا الْقُبُورُ بُعْثِرَتْ 4 ج	عَلِمَتْ نَفْسٌ مَّا
फाड़ दिए जाएंगे	और जब	कब्रें

قَدَّمَتْ وَآخَرَتْ 5 ط	يَا أَيُّهَا الْإِنْسَانُ	مَا غَرَّكَ	بِرَبِّكَ
उसने आगे भेजा	और उसने पीछे छोड़ा	ऐ	इंसान

الْكَرِيمِ 6 ل	الَّذِي خَلَقَكَ	فَسَوَّكَ	فَعَدَلَكَ 7 ج	فِي أَيِّ صُورَةٍ
जो बहुत इज़्ज़त वाला है	वो जिसने	पैदा किया तुझे	फिर उसने दुरुस्त किया तुझे	फिर उसने बराबर किया तुझे

مَا	شَاءَ	رَكَّبَكَ ⑧	كَلَّا	بَلْ	تُكْذِبُونَ	بِالدِّينِ ⑨	وَإِنَّ
जो	उसने चाहा	उसने जोड़ दिया तुझे	हरगिज़ नहीं	बल्कि	तुम झुठलाते हो	बदले (के दिन) को	और बेशक

عَلَيْكُمْ	لَحْفَظَيْنِ ⑩	كِرَامًا	كَاتِبِينَ ⑪	يَعْلَمُونَ	مَا
तुम पर	यक्रीनन निगरान हैं	जो मोअज़िज़	लिखने वाले हैं	वो जानते हैं	जो कुछ

تَفْعَلُونَ ⑫	إِنَّ	الْأَبْرَارَ	لَفِي نَعِيمٍ ⑬	وَإِنَّ	الْفُجَّارَ
तुम करते हो	बेशक	नेक लोग	यक्रीनन नेअमतों में होंगे	और बेशक	बदकार लोग

لَفِي جَحِيمٍ ⑭	يَصْلُونَهَا	يَوْمَ	الدِّينِ ⑮	وَمَا	هُمْ
यक्रीनन जहन्नम में होंगे	वो जलेंगे उसमें	दिन	बदले के	और नहीं	वो

عَنْهَا	بِغَايِبِينَ ⑯	وَمَا	أَدْرَاكَ	مَا	يَوْمَ	الدِّينِ ⑰	ثُمَّ
उससे	कभी गायब होने वाले	और क्या चीज़	बताए आपको	क्या है	दिन	बदले का	फिर

مَا	أَدْرَاكَ	مَا	يَوْمَ	الدِّينِ ⑱	يَوْمَ	لَا تَبْلُكَ	نَفْسٌ
क्या चीज़	बताए आपको	क्या है	दिन	बदले का	जिस दिन	ना मालिक होगा	कोई नफ़्स

لِنَفْسٍ	شَيْعًا ⑲	وَالْأَمْرُ	يَوْمَئِذٍ	لِلَّهِ ⑳
किसी नफ़्स के लिए	कुछ भी	और हुक्म	उस दिन	अल्लाह ही का होगा

وَيْلٌ	لِّلْبُطْفِيفِينَ ①	الَّذِينَ	إِذَا	اُكْتُلُوا	عَلَى النَّاسِ
हलाकत है	नाप तोल में कमी करने वालों के लिए	वो लोग	जब	वो नाप कर लेते हैं	लोगों से

يَسْتَوْفُونَ ②	وَإِذَا	كَالُوهُمْ	أَوْ	وَزَنُوهُمْ	يُخْسِرُونَ ③
वो पूरा-पूरा लेते हैं	और जब	वो नाप कर देते हैं उन्हें	या	वो तोल कर देते हैं उन्हें	वो कम देते हैं

أَلَا	يُظُنُّ	أُولَئِكَ	أَنَّهُمْ	مَّبْعُوثُونَ ^④	لِيَوْمٍ عَظِيمٍ ^⑤	يَوْمَ
क्या नहीं	यक्रीन रखते	ये लोग	बेशक वो	उठाए जाने वाले हैं	एक बड़े दिन के लिए	जिस दिन
يَقُومُ	النَّاسُ	لِرَبِّ	الْعَالَمِينَ ^⑥	كَلَّا	إِنَّ	كِتَابَ
खड़े होंगे	लोग	रब के लिए	तमाम जहानों के	हरगिज़ नहीं	बेशक	किताब (नामा-ए-आमाल)
الْفُجَّارِ	لَفِي سَجِّينٍ ^⑦	وَمَا	أَدْرَاكَ	مَا	سَجِّينٍ ^⑧	كِتَابٍ
बदकारों की	यक्रीनन सिज्जीन में है	और क्या चीज़	बताए आपको	क्या है	सिज्जीन	एक किताब है
مَّرْقُومٍ ^⑨	وَيْلٌ	يَوْمَئِذٍ	لِّلْمُكَذِّبِينَ ^⑩	الَّذِينَ	يُكَذِّبُونَ	
लिखी हुई	हलाकत है	उस दिन	झुठलाने वालों के लिए	वो जो	झुठलाते हैं	
بِیَوْمِ الدِّينِ ^⑪	وَمَا	يُكَذِّبُ	بِهِ	إِلَّا	كُلُّ	مُعْتَدٍ
बदले के दिन को	और नहीं	झुठलाता	उसे	मगर	हर	हद से बढ़ने वाला
أَثِيمٍ ^⑫	إِذَا	تُثْلَى	عَلَيْهِ	أَيُّنَا	قَالَ	أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ^⑬
सख्त गुनाहगार	जब	पढ़ी जाती हैं	उस पर	आयात हमारी	वो कहता है	कहानियाँ हैं
كَلَّا	بَلْ	رَانَ	عَلَى قُلُوبِهِمْ	مَا	كَانُوا	يَكْسِبُونَ ^⑭
हरगिज़ नहीं	बल्कि	जंग चढ़ गया है	उनके दिलों पर	उसका जो	थे वो	वो कमाई करते
كَلَّا	إِنَّهُمْ	عَنْ رَبِّهِمْ	يَوْمَئِذٍ	لَّسَّاجِدُونَ ^⑮	ثُمَّ	إِنَّهُمْ
हरगिज़ नहीं	बेशक वो	अपने रब से	उस दिन	अलबत्ता हिजाब में रखे जाने वाले हैं	फिर	बेशक वो
لَصَّالُوا	الْجَحِيمِ ^⑯	ثُمَّ	يُقَالُ	هَذَا	الَّذِي	كُنْتُمْ بِهِ
अलबत्ता झोंके जाने वाले हैं	जहन्नम में	फिर	कहा जाएगा	ये है	वो चीज़	थे तुम
يُكَذِّبُونَ ^⑰	كَلَّا	إِنَّ	كِتَابَ	الْأَبْرَارِ	لَفِي عِلِّيِّينَ ^⑱	وَمَا
तुम झुठलाया करते	हरगिज़ नहीं	बेशक	किताब	नेक लोगों की	यक्रीनन इल्लीयीन में है	और क्या चीज़

أَدْرِكَ مَا عَلَيُّونَ ١٩ ط	كِتَبٌ مَّرْقُومٌ ٢٠ لا	يَشْهَدُهُ ٢١ ط	الْمُقَرَّبُونَ ٢١ ط
बताए आपको	क्या है	इल्लीयन	एक किताब है
लिखी हुई	हाज़िर रहते हैं उस पर	मुकर्रब (फ़रिश्ते)	
إِنَّ الْأَبْرَارَ لَفِي نَعِيمٍ ٢٢ لا	عَلَى الْأَرَائِكِ ٢٣ لا	يَنْظُرُونَ ٢٣ لا	تَعْرِفُ ٢٣ لا
बेशक	नेक लोग	यक़ीनन नेअमतों में होंगे	मसनदों पर
वो देख रहे होंगे	आप पहचान लेंगे		
فِي وُجُوهِهِمْ نَضْرَةٌ ٢٤ ج	النَّعِيمِ ٢٤ ج	يُسْقَوْنَ ٢٤ ج	مِنْ رَحِيقٍ مَّخْتُومٍ ٢٥ لا
उनके चेहरों में	रौनक	नेअमत की	वो पिलाए जाएंगे
ख़ालिस शराब	मोहर बंद		
خِتَهُ مُسْكٌ ط	وَفِي ذَلِكَ ٢٦ ط	فَلْيَتَنَافِسِ ٢٦ ط	الْمُتَنَافِسُونَ ٢٦ ط
उसकी मोहर	मुश्क होगी	और उसमें	पस चाहिए कि एक दूसरे पर बाज़ी ले जाएँ
बाज़ी ले जाने वाले			
وَمَزَاجُهُ مِنْ تَسْنِيمٍ ٢٧ لا	عَيْنًا ٢٧ لا	يَشْرَبُ ٢٧ لا	بِهَا ٢٧ لا
और आमेज़िश उसकी	तसनीम से होगी	जो एक चश्मा है	पिएंगे
उससे	मुकर्रब लोग		
إِنَّ الَّذِينَ أَجْرَمُوا كَانُوا مِنَ الَّذِينَ آمَنُوا يَضْحَكُونَ ٢٩ ط	الَّذِينَ آمَنُوا ٢٩ ط	يَضْحَكُونَ ٢٩ ط	إِنَّ ٢٩ ط
बेशक	वो जिन्होंने	जुर्म किए	थे वो
उन लोगों पर जो	ईमान लाए	वो हंसा करते	
وَإِذَا مَرُّوا بِهِمْ يَتَغَامَزُونَ ٣٠ ط	وَإِذَا ٣٠ ط	انْقَلَبُوا ٣٠ ط	إِلَى ٣٠ ط
और जब	वो गुज़रते	उनके पास से	वो एक दूसरे को आंख से इशारे करते
और जब			
أَهْلِهِمْ انْقَلَبُوا فَكِهِينَ ٣١ ط	وَإِذَا ٣١ ط	رَأَوْهُمْ ٣١ ط	قَالُوا ٣١ ط
अपने घर वालों के	वो पलटते	दिल्लगी करते हुए	और जब
वो देखते उन्हें	वो कहते	बेशक	
هَؤُلَاءِ لَصَّالُونَ ٣٢ لا	وَمَا ٣٢ لا	أُرْسِلُوا ٣٢ لا	عَلَيْهِمْ ٣٢ لا
ये लोग	यक़ीनन गुमराह हैं	हालांकि नहीं	वो भेजे गए थे
उन पर	निगहबान बना कर		
فَالْيَوْمَ الَّذِينَ آمَنُوا مِنَ الْكُفَّارِ يَضْحَكُونَ ٣٤ لا	عَلَى الْأَرَائِكِ ٣٤ لا	يَضْحَكُونَ ٣٤ لا	حَفِظِينَ ٣٣ ط
पस आज के दिन	वो लोग जो	ईमान लाए	काफ़िरों पर
वो हंस रहे होंगे	मसनदों पर		

يَنْظُرُونَ ^ط 35	هَلْ	تُوبَ	الْكُفَّارُ	مَا	كَانُوا	يَفْعَلُونَ ^ع 36
वो देख रहे होंगे	क्या	बदला दिए गए	काफ़िर	जो	थे वो	वो किया करते

آيَاتُهَا: 25	84 سُورَةُ الْإِنْشِقَاقِ مَكِّيَّةٌ 83	رُكُوعُهَا: 1
---------------	---	---------------

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

إِذَا السَّمَاءُ انْشَقَّتْ ^ل ①	وَآذَنْتُ	لِرَبِّهَا	وَحُقَّتْ ^ل ②	وَإِذَا
फट जाएगा	और वो कान लगाए हुए है	अपने रब के लिए	और वो हक़ दिया गया है	और जब

الْأَرْضُ	مُدَّتْ ۛ ۛ	وَأَلْقَتْ	مَا	فِيهَا	وَتَخَلَّتْ ۛ ۛ	وَآذَنْتُ
ज़मीन	फैला दी जाएगी	और वो डाल देगी	जो कुछ	उसमें है	और वो ख़ाली हो जाएगी	और वो कान लगाए हुए है

لِرَبِّهَا	وَحُقَّتْ ط 5	يَا أَيُّهَا	الْإِنْسَانُ	إِنَّكَ	كَادِحٌ	إِلَى رَبِّكَ
अपने रब के लिए	और वो हक़ दी गई है	ऐ	इंसान	बेशक तू	मेहनत करने वाला है	तरफ़ अपने रब के

كَدَحًا	فَبُلِقِيهِ ^ج 6	فَأَمَّا	مَنْ	أُوتِيَ	كِتَبَهُ	بِإِيمَانِهِ ^ل 7	فَسَوْفَ
सख़्त मेहनत	फिर मिलने वाला है उससे	तो रहा	वो जो	दिया गया	किताब अपनी	अपने दाएँ हाथ में	तो अनक़रीब

يُحَاسَبُ	حِسَابًا	يَسِيرًا ^ل 8	وَيَنْقَلِبُ	إِلَىٰ أَهْلِهِ	مَسْرُورًا ^ط 9	وَأَمَّا
वो हिसाब लिया जाएगा	हिसाब	निहायत आसान	और वो लौटेगा	तरफ़ अपने घर वालों के	मसरूर/ख़ुश	और रहा

مَنْ	أُوتِيَ	كِتَبَهُ	وَرَاءَ	ظَهْرِهِ ^ل 10	فَسَوْفَ	يَدْعُوًا	ثُبُورًا ^ل 11
वो जो	दिया गया	किताब अपनी	पीछे	अपनी पुश्त के	तो अनक़रीब	वो पुकारेगा	हलाक़त को

وَيَصْلَىٰ	سَعِيرًا ^ط 12	إِنَّهُ	كَانَ	فِي أَهْلِهِ	مَسْرُورًا ^ط 13	إِنَّهُ	ظَنَّ
और वो जलेगा	भड़कती आग में	बेशक वो	था वो	अपने घर वालों में	मसरूर/ख़ुश	बेशक वो	वो समझता था

أَنْ	لَّنْ	يَحُورَ ^ط 14	بَلَىٰ ^ج	إِنَّ	رَبَّهُ	كَانَ	بِهِ	بَصِيرًا ^ط 15
कि	हरगिज़ नहीं	वो लौटेगा	क्यों नहीं	बेशक	रब उसका	था	उसे	ख़ूब देखने वाला

فَلَا	أُقْسِمُ	بِالشَّفَقِ 16	وَالَّيْلِ	وَمَا	وَسَقَى 17	وَالْقَبْرِ
पस नहीं	मैं कसम खाता हूँ	शफ़क़ की	और रात की	और उसकी जिसे	वो समेट ले	और चांद की
إِذَا	اتَّسَقَ 18	لَتَرْكَبُنَّ	طَبَقًا	عَنْ طَبَقٍ 19	فَمَا	لَهُمْ
जब	वो पूरा हो जाए	अलबत्ता तुम ज़रूर चढ़ते जाओगे	एक दर्जे को	दूसरे दर्जे से	पस क्या है	उन्हें
لَا يُؤْمِنُونَ 20	وَإِذَا	قُرِئَ	عَلَيْهِمْ	الْقُرْآنُ	لَا يَسْجُدُونَ 21	بَلِ
नहीं वो ईमान लाते	और जब	पढ़ा जाता है	उन पर	कुरआन	नहीं वो सज्दा करते	बल्कि
الَّذِينَ	كَفَرُوا	يَكْذِبُونَ 22	وَاللَّهُ	أَعْلَمُ	بِمَا	يُوعُونَ 23
वो लोग जिन्होंने	कुफ़ किया	वो झूठलाते हैं	और अल्लाह	ख़ूब जानता है	उसे जो	वो समेट रहे हैं
فَبَشِّرْهُمْ	بِعَذَابٍ	أَلِيمٍ 24	إِلَّا	الَّذِينَ	آمَنُوا	
पस ख़ुशख़बरी दे दीजिए उन्हें	अज़ाब	दर्दनाक की	सिवाए	उन लोगों के जो	ईमान लाए	
وَعَمِلُوا	الصَّالِحَاتِ	لَهُمْ	أَجْرٌ	غَيْرُ	مَمْنُونٍ 25	
और उन्होंने अमल किए	नेक	उनके लिए	अज़र है	ना	ख़त्म होने वाला	
85 سُورَةُ الْبُرُوجِ مَكِّيَّةٌ 27 أَيَاتُهَا: 22 رُكُوعُهَا: 1 بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ						
وَالسَّيِّئَاتِ	ذَاتِ الْبُرُوجِ 1	وَالْيَوْمِ	الْبُعُودِ 2	وَشَاهِدٍ	وَمَشْهُودٍ 3	
कसम है आसमान	बुर्जों वाले की	और दिन	वादा किए गए की	और हाज़िर होने वाले	और हाज़िर किए हुए की	
قُتِلَ	أَصْحَابُ الْأُخُودِ 4	النَّارِ	ذَاتِ الْوُقُودِ 5	إِذْ	هُمْ	عَلَيْهَا
मारे गए	ख़ंदकों वाले	जो आग थी	ईंधन वाली	जब	वो	उस पर
قُعُودٍ 6	وَهُمْ	عَلَى	مَا	يَفْعَلُونَ	بِالْمُؤْمِنِينَ	شُهُودٍ 7
बैठे हुए थे	और वो	ऊपर	उसके जो	वो कर रहे थे	साथ मोमिनों के	गवाह थे
وَمَا						وَمَا
						और नहीं

نَقَمُوا مِنْهُمْ إِلَّا أَنْ يُؤْمِنُوا بِاللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَمِيدِ ^٨	نَقَمُوا	مِنْهُمْ	إِلَّا	أَنْ	يُؤْمِنُوا	بِاللَّهِ	الْعَزِيزِ	الْحَمِيدِ ^٨
उन्होंने इंतिकाम लिया	उनसे	मगर	ये कि	वो ईमान लाए	अल्लाह पर	जो बहुत ज़बरदस्त है	खूब तारीफ़ वाला है	
الَّذِي لَهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ وَاللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ	الَّذِي	لَهُ	مُلْكُ	السَّمَوَاتِ	وَالْأَرْضِ ۖ	وَاللَّهُ	عَلَى	كُلِّ شَيْءٍ
वो जो	उसी के लिए है	बादशाहत	आसमानों	और ज़मीन की	और अल्लाह	ऊपर	हर	चीज़ के
شَهِيدٌ ^٩ إِنَّ الَّذِينَ فَتَنُوا الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ ثُمَّ	شَهِيدٌ ^٩	إِنَّ	الَّذِينَ	فَتَنُوا	الْمُؤْمِنِينَ	وَالْمُؤْمِنَاتِ	ثُمَّ	
गवाह है	बेशक	वो लोग जिन्होंने	आज़माइश में डाला	मोमिन मर्दों को	और मोमिन औरतों को	फिर		
لَمْ يَتُوبُوا فَلَهُمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ وَلَهُمْ عَذَابُ الْحَرِيقِ ^{١٠}	لَمْ	يَتُوبُوا	فَلَهُمْ	عَذَابُ	جَهَنَّمَ	وَلَهُمْ	عَذَابُ	الْحَرِيقِ ^{١٠}
ना	उन्होंने तौबा की	तो उनके लिए	अज़ाब है	जहन्नम का	और उनके लिए	अज़ाब है	जलने का	
إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ جَنَّاتٌ تَجْرِي	إِنَّ	الَّذِينَ	آمَنُوا	وَعَمِلُوا	الصَّالِحَاتِ	لَهُمْ	جَنَّاتٌ	تَجْرِي
बेशक	वो जो	ईमान लाए	और उन्होंने अमल किए	नेक	उनके लिए	बाग़ात हैं	बहती हैं	
مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۚ ذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْكَبِيرُ ^{١١} إِنَّ بَطْشَ	مِنْ تَحْتِهَا	الْأَنْهَارُ ۚ	ذَٰلِكَ	الْفَوْزُ	الْكَبِيرُ ^{١١}	إِنَّ	بَطْشَ	
उनके नीचे से	नहरें	ये	कामयाबी है	बहुत बड़ी	बेशक	पकड़		
رَبِّكَ لَشَدِيدٌ ^{١٢} إِنَّهُ هُوَ يُبْدِئُ وَيُعِيدُ ^{١٣} وَهُوَ الْغَفُورُ	رَبِّكَ	لَشَدِيدٌ ^{١٢}	إِنَّهُ	هُوَ	يُبْدِئُ	وَيُعِيدُ ^{١٣}	وَهُوَ	الْغَفُورُ
आपके रब की	अलबत्ता बहुत शदीद है	बेशक वो	वो ही	पहली बार पैदा करता है	और वो ही लौटाएगा	और वो ही है	बहुत बख्शने वाला	
الْوَدُودُ ^{١٤} ذُو الْعَرْشِ الْبَهِيمُ ^{١٥} فَعَالٌ لِّهَا يُرِيدُ ^{١٦} هَلْ	الْوَدُودُ ^{١٤}	ذُو الْعَرْشِ	الْبَهِيمُ ^{١٥}	فَعَالٌ	لِّهَا	يُرِيدُ ^{١٦}	هَلْ	
बहुत मोहब्बत करने वाला	अर्श वाला	बड़ी शान वाला	कर गुज़रने वाला	उसे जो	वो चाहता है	क्या		
أَتُنكَ حَدِيثُ الْجُنُودِ ^{١٧} فِرْعَوْنُ وَثَمُودَ ^{١٨} بَلِ الَّذِينَ	أَتُنكَ	حَدِيثُ	الْجُنُودِ ^{١٧}	فِرْعَوْنُ	وَتَمُودَ ^{١٨}	بَلِ	الَّذِينَ	
आई आपके पास	ख़बर	लश्करों की	फ़िराऊन	और समूद के	बल्कि	वो जिन्होंने		
كَفَرُوا فِي تَكْذِيبٍ ^{١٩} وَاللَّهُ مِنْ وَرَائِهِمْ مُحِيطٌ ^{٢٠}	كَفَرُوا	فِي	تَكْذِيبٍ ^{١٩}	وَاللَّهُ	مِنْ	وَرَائِهِمْ	مُحِيطٌ ^{٢٠}	
कुफ़्र किया	झुठलाने में लगे हुए हैं	और अल्लाह	उनके पीछे से (उन्हें)	घेरने वाला है				

بَلْ	هُوَ	قُرْآنٌ	مَّجِيدٌ 21	فِي لَوْحٍ مَّحْفُوظٍ 22
बल्कि	वो	कुरआन है	बड़ी शान वाला	लौहे महफूज़ में

آيَاتُهَا: 17	86 سُورَةُ الطَّارِقِ مَكِّيَّةٌ 36	رُكُوعُهَا: 1
---------------	-------------------------------------	---------------

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

وَالسَّيِّئَاتِ 1	وَمَا	أَدْرَاكَ	مَا	الطَّارِقُ 2	النَّجْمُ
क़सम है आसमान की	और रात को आने वाले की	और क्या चीज़	बताए आपको	क्या है	रात को आने वाला
सितारा है					

النَّاقِبُ 3	إِنْ	كُلُّ نَفْسٍ	لَبَّا	عَلَيْهَا	حَافِظٌ 4	فَلْيَنْظُرِ
चमकता हुआ	नहीं	कोई नफ़्स	मगर	है उस पर	एक हिफ़ाज़त करने वाला	पस चाहिए कि देखे

الْإِنْسَانُ	مِمَّ	خُلِقَ 5	خُلِقَ	مِنْ مَّاءٍ	دَافِقٌ 6	يَخْرُجُ
इन्सान	किस चीज़ से	वो पैदा किया गया	वो पैदा किया गया	पानी से	उछलने वाले	जो निकलता है

مِنْ بَيْنِ الصُّلْبِ	وَالْتَّرَائِبِ 7	إِنَّهُ	عَلَى رَجْعِهِ	لَقَادِرٌ 8	يَوْمَ
दर्मियान से	पीठ	और सीने की हड्डियों के	बेशक वो	उसके लौटाने पर	यक़ीनन क़ादिर है
जिस दिन					

تُبْلَى	السَّرَائِرِ 9	فَبَا	لَهُ	مِنْ قُوَّةٍ	وَلَا	نَاصِرٌ 10
जाँच पड़ताल की जाएगी	तमाम राज़ों की	तो नहीं होगी	उसके लिए	कोई कुव्वत	और ना	कोई मददगार

وَالسَّيِّئَاتِ	ذَاتِ الرَّجْعِ 11	وَالْأَرْضِ	ذَاتِ الصَّدْعِ 12	إِنَّهُ	لَقَوْلٌ
क़सम है आसमान की	जो पलटने वाला है	और ज़मीन की	जो फटने वाली है	बेशक वो	यक़ीनन एक बात है

فَصْلٌ 13	وَمَا	هُوَ	بِالْهَزْلِ 14	إِنَّهُمْ	يَكِيدُونَ	كَيْدًا 15
फ़ैसला कुन	और नहीं है	वो	कोई हंसी मज़ाक़	बेशक वो	वो चाल चल रहे हैं	एक चाल

وَإِكِيدُ	كَيْدًا 16	فَمِهْلٍ	الْكَافِرِينَ	أَمِهْلُهُمْ	رَوِيْدًا 17
और मैं तदबीर कर रहा हूँ	एक तदबीर	पस मोहलत दे दीजिए	काफ़िरों को	मोहलत देना उन्हें	(मोहलत) थोड़ी सी

رُكُوعُهَا: 1

87 سُورَةُ الْأَعْلَى مَكِّيَّةٌ 8

آيَاتُهَا: 19

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

سَبِّحْ	اسْمَ	رَبِّكَ	الْأَعْلَى ①	الَّذِي	خَلَقَ	فَسَوَّى ②	وَالَّذِي
तस्बीह कीजिए	नाम की	अपने रब के	जो बहुत बुलंद है	वो जिसने	पैदा किया	फिर उसने दुरुस्त किया	और वो जिसने
قَدَّرَ	فَهْدَى ③	وَالَّذِي	أَخْرَجَ	الْبَرْعَى ④	فَجَعَلَهُ	غُثَاءً	
अंदाज़ा किया	फिर उसने हिदायत बख्शी	और वो जिसने	निकाला	चारा	फिर उसने बना दिया उसे	कूड़ा	
أَحْوَى ⑤	سَنُقْرِئُكَ	فَلَا	تَنْسَى ⑥	إِلَّا	مَا	شَاءَ	اللَّهُ ⑦
स्याह	अनकरीब हम पढ़ा देंगे आपको	फिर नहीं	आप भूलेंगे	मगर	जो	चाहे	अल्लाह
إِنَّهُ يَعْلَمُ	الْجَهَرَ	وَمَا	يَخْفَى ⑦	وَنُيَسِّرُكَ	لِلْيُسْرَى ⑧		
वो जानता है	ज़ाहिर को	और उसको जो	पोशीदा है	और हम आसानी कर देंगे आपके लिए	आसान (रास्ते) की		
فَذَكِّرْ	إِنْ	نَفَعَتْ	الذِّكْرَى ⑨	سَيَذَكِّرُ	مَنْ	يَخْشَى ⑩	
पस नसीहत कीजिए	अगर	फ़ायदा दे	नसीहत करना	अनकरीब नसीहत पकड़ेगा	वो जो	डरता होगा	
وَيَتَجَنَّبُهَا	الْأَشْقَى ⑪	الَّذِي	يَصْلَى	النَّارَ	الْكُبْرَى ⑫	ثُمَّ	
और इज्तिनाब करेगा उस से	सब से ज़्यादा बदबख्त	वो जो	जलेगा	आग में	बहुत बड़ी	फिर	
لَا يَمُوتُ	فِيهَا	وَلَا	يَحْيَى ⑬	قَدْ	أَفْلَحَ	مَنْ	تَزَكَّى ⑭
ना वो मरेगा	उसमें	और ना	वो जिएगा	यक़ीनन	फ़लाह पा गया	वो जो	पाक हुआ
وَذَكَّرَ	اسْمَ	رَبِّهِ	فَصَلَّى ⑮	بَلْ	تُؤْتِرُونَ		
और उसने ज़िक्र किया	नाम	अपने रब का	फिर उसने नमाज़ पढ़ी	बल्कि	तुम तरजीह देते हो		
الْحَيَاةَ	الدُّنْيَا ⑯	وَالْآخِرَةَ	خَيْرٌ	وَأَبْقَى ⑰	إِنَّ	هَذَا	
ज़िंदगी को	दुनिया की	और आख़िरत	बेहतर है	और ज़्यादा बाक़ी रहने वाली है	यक़ीनन	ये	

لَفِي الصُّحُفِ	الْأُولَى 18	صُحُفِ	إِبْرَاهِيمَ	وَمُوسَى 19
अलबत्ता सहीफों में है	पहले	सहीफ़े	इब्राहीम	और मूसा के

آيَاتُهَا: 26	88 سُورَةُ الْغَاشِيَةِ مَكِّيَّةٌ 68	رُكُوعُهَا: 1
---------------	---------------------------------------	---------------

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

هَلْ أَتَاكَ	حَدِيثُ الْغَاشِيَةِ 1	وَجُوهٌ	يَوْمَئِذٍ	خَاشِعَةٌ 2
क्या	खबर	ढांप लेने वाली की	कुछ चेहरे	उस दिन

عَامِلَةٌ	نَّاصِبَةٌ 3	تَصَلَّى	نَارًا	حَامِيَةً 4	تُسْقَى	مِنْ عَيْنٍ
अमल करने वाले	थक जाने वाले	वो जलेंगे	आग में	भड़कती हुई	वो पिलाए जाएंगे	एक चश्मे से

أَنِيتُ 5	لَيْسَ لَهُمْ	طَعَامٌ	إِلَّا	مِنْ ضَرِيحٍ 6	لَّا يُسِينُ
खौलते हुए पानी के	नहीं है	उनके लिए	कोई खाना	सिवाय	कांटों के

وَلَا يُغْنِي	مِنْ جُوعٍ 7	وَجُوهٌ	يَوْمَئِذٍ	نَّاعِبَةٌ 8	لِّسَعِيهَا
और ना	वो काम आएगा	भूख से	कुछ चेहरे	उस दिन	तरो-ताज़ा होंगे

رَاضِيَةٌ 9	فِي جَنَّةٍ عَالِيَةٍ 10	لَّا تَسْمَعُ	فِيهَا	لَاغِيَةً 11	فِيهَا
राज़ी होंगे	बुलंद जन्नत में होंगे	नहीं वो सुनेंगे	उसमें	कोई लगव बात	उसमें

عَيْنٌ	جَارِيَةٌ 12	فِيهَا	سُرُرٌ	مَّرْفُوعَةٌ 13	وَ أَكْوَابٌ
एक चश्मा होगा	जारी/रवां	उसमें	मसनदें होंगी	बुलंद	और प्याले

مَوْضُوعَةٌ 14	وَنَبَارِقٌ	مَصْفُوفَةٌ 15	وَزَرَابِيُّ	مَبْثُوثَةٌ 16	أَفَلَا
रखे हुए	और तकिये	सफ़ दर सफ़	और नफ़ीस क़ालीन	फैलाए हुए	क्या फिर नहीं

يَنْظُرُونَ	إِلَى الْإِبِلِ	كَيْفَ	خُلِقَتْ 17	وَإِلَى السَّمَاءِ	كَيْفَ
वो देखते	तरफ़ ऊंटों के	कैसे	वो पैदा किए गए	और तरफ़ आसमान के	कैसे

رُفِعَتْ 18	وَالِى الْجِبَالِ كَيْفَ	نُصِبَتْ 19	وَالِى الْأَرْضِ كَيْفَ
वो बुलंद किया गया	और तरफ़ पहाड़ों के	कैसे	और तरफ़ ज़मीन के

سُطِحَتْ 20	فَذَكِّرْ 21	إِنَّمَا أَنْتَ	مُذَكِّرٌ 22	لَسْتَ عَلَيْهِمْ
वो बिछाई गई	पस नसीहत कीजिए	बेशक	आप तो	नसीहत करने वाले हैं

بُصِيطِرٌ 22	إِلَّا مَنْ	تَوَلَّى	وَكَفَرَ 23	فَيُعَذِّبُهُ	اللَّهُ الْعَذَابُ
दारोगा/ज़िम्मेदार	मगर	वो जिसने	मुंह मोड़ा	और उसने इंकार किया	तो अज़ाब देगा उसे

الْأَكْبَرُ 24	إِنَّ	إِلَيْنَا	إِيَابَهُمْ 25	ثُمَّ	إِنَّ	عَلَيْنَا	حِسَابَهُمْ 26
सबसे बड़ा	बेशक	हमारी ही तरफ़	लौटना है उनका	फिर	बेशक	हमारे ही ज़िम्मे	हिसाब है उनका

آيَاتُهَا: 30	سُورَةُ الْفَجْرِ مَكِّيَّةٌ 10	رُكُوعُهَا: 1
---------------	---------------------------------	---------------

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

وَالْفَجْرِ 1	وَلَيَالٍ عَشْرٍ 2	وَالشَّفْعِ 3	وَالْوَتْرِ 4	وَاللَّيْلِ 5	إِذَا يَسِرُّ 6
क़सम है फ़ज्र की	और दस रातों की	और जुफ़्त	और ताक़ की	और रात की	जब

هَلْ فِي ذَلِكَ قَسَمٌ لِّذِي حِجْرٍ 5	أَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ
क्या नहीं	आपने देखा

رَبُّكَ 6	بِعَادٍ 7	إِرمَ	ذَاتِ الْعِمَادِ 8	الَّتِي لَمْ يُخْلَقْ
आपके रब ने	साथ आद के	जो इरम (कबीले) के थे	सुतनों वाले	वो जो

مِثْلُهَا 9	فِي الْبِلَادِ 10	وَتَسُودُ 11	الَّذِينَ جَابُوا الصَّخْرَ	بِالْوَادِ 12
उन जैसा	शहरों में	और समूद के	वो जिन्होंने	तराशा

وَفِرْعَوْنَ 13	ذِي الْأَوْتَادِ 14	الَّذِينَ طَغَوْا 15	فِي الْبِلَادِ 16	فَاكْثَرُوا 17
और फ़िरऔन	मेखों वाले के	वो जिन्होंने	सरकशी की	शहरों में

فِيهَا	الْفَسَادُ ¹²	فَصَبَّ	عَلَيْهِمْ	رَبُّكَ	سَوَّطَ	عَذَابٍ ¹³	إِنَّ
उनमें	फ़साद	तो बरसाया	उन पर	आपके रब ने	कोड़ा	अज़ाब का	बेशक
رَبُّكَ	لِبِالْبُرْصَادِ ¹⁴	فَإِمَّا	الْإِنْسَانُ	إِذَا مَا	ابْتَلَاهُ	رَبُّهُ	
रब आपका	अलबत्ता घात में है	तो रहा	इंसान	जब	आज़माता है उसे	रब उसका	
فَاكْرَمَهُ	وَنَعَّمَهُ ¹⁵	فَيَقُولُ	رَبِّي	اَكْرَمَنِ ¹⁵	وَأَمَّا	إِذَا مَا	
फिर वो इज़्ज़त देता है उसे	और वो नेअमत देता है उसे	तो वो कहता है	मेरे रब ने	इज़्ज़त दी मुझे	और लेकिन	जब कभी	
ابْتَلَاهُ	فَقَدَّرَ	عَلَيْهِ	رِزْقَهُ ¹⁶	فَيَقُولُ	رَبِّي	أَهَانِ ¹⁶	
वो आज़माता है उसे	फिर वो तंग कर देता है	उस पर	रिज़क उसका	तो वो कहता है	मेरे रब ने	ज़लील कर दिया मुझे	
كَلَّا	بَلْ	لَا	تُكْرِمُونَ	الْيَتِيمَ ¹⁷	وَلَا	تَحْضُونَ	عَلَى طَعَامِ
हरगिज़ नहीं	बल्कि	नहीं	तुम इज़्ज़त देते	यतीम को	और नहीं	तुम आपस में तरगीब देते	खाना खिलाने पर
الْيَسْكِينِ ¹⁸	وَتَأْكُلُونَ	التُّرَاثَ	أَكْلًا	لَبَّاءُ ¹⁹	وَتُحِبُّونَ	الْبَالَ	
मिस्कीन के	और तुम खा जाते हो	मीरास को	खा जाना	समेट कर	और तुम मोहब्बत रखते हो	माल से	
حُبًّا	جَهًّا ²⁰	كَلَّا	إِذَا	دُكَّتِ	الْأَرْضُ	دَكَّادَكَّا ²¹	وَجَاءَ
मोहब्बत	बहुत ज़्यादा	हरगिज़ नहीं	जब	रेज़ा-रेज़ा कर दी जाएगी	ज़मीन	ख़ूब रेज़ा-रेज़ा करना	और आएगा
رَبُّكَ	وَالْمَلِكُ	صَفَّا صَفًّا ²²	وَجَائِءَ	يَوْمِئِذٍ	بِجَهَنَّمَ ²³	يَوْمِئِذٍ	
रब अपना	और फ़रिश्ते	सफ़्र दर सफ़्र	और लाई जाएगी	उस दिन	जहन्नम	उस दिन	
يَتَذَكَّرُ	الْإِنْسَانُ	وَإِنِّي	لَهُ	الذِّكْرَى ²³	يَقُولُ	يَلِيَّتَنِي	
नसीहत पकड़ेगा	इंसान	और क्यों कर होगा	उसके लिए	नसीहत पकड़ना	वो कहेगा	ऐ काश कि मैं	
قَدَّمْتُ	لِحَيَاتِي ²⁴	فِيَوْمِئِذٍ	لَا يُعَذِّبُ	عَذَابَهُ	أَحَدٌ ²⁵	وَلَا يُوثِقُ	
आगे भेजा होता मैंने	अपनी ज़िंदगी के लिए	तो उस दिन	ना अज़ाब देगा	अज़ाब उस जैसा	कोई एक	और ना बांधेगा	

وَتَأْتِيهِمْ	أَحَدٌ ٢٦ ط	يَأْتِيَتُهَا النَّفْسُ	الْبُطَيْنَةُ ٢٧ ط	أَرْجِعِي	إِلَى رَبِّكَ
बांधना उस जैसा	कोई एक	ऐ नफ़्स	जो मुत्मईन है	वापस चलो	तरफ़ अपने रब के

رَاضِيَةً	مَرْضِيَّةً ٢٨ ج	فَادْخُلِي	فِي عِبْدِي ٢٩ لا	وَادْخُلِي	جَنَّتِي ٣٠ ع
राज़ी होकर	पसंदीदा बन कर	फिर दाख़िल हो जाओ	मेरे बंदों में	और दाख़िल हो जाओ	मेरी जन्नत में

اَيَاتُهَا: 20	90 سُورَةُ الْبَلَدِ مَكِّيَّةٌ 35	رُكُوعُهَا: 1
----------------	------------------------------------	---------------

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

لَا أُقْسِمُ	بِهَذَا الْبَلَدِ ١ لا	وَأَنْتَ	حِلٌّ	بِهَذَا الْبَلَدِ ٢ لا	وَوَالِدٍ
नहीं मैं क़सम खाता हूँ	इस शहर की	और आप	मुक़ीम हैं	इस शहर में	क़सम है वालिद की

وَمَا	وَلَدٌ ٣ لا	لَقَدْ	خَلَقْنَا	الْإِنْسَانَ	فِي كَبَدٍ ٤ ط	أَيَحْسَبُ
और जिसे	उसने जन्म दिया	अलबत्ता तहक़ीक़	पैदा किया हमने	इंसान को	मशक्कत में	क्या वो समझता है

أَنْ لَّنْ	يَقْدِرَ	عَلَيْهِ	أَحَدٌ ٥ ط	يَقُولُ	أَهْلَكْتُ	مَالًا	لُبَدًا ٦ ط
कि	हरगिज़ नहीं	क्रादिर होगा	उस पर	कोई एक	वो कहता है	हलाक कर दिया मैंने	माल ढेरों

أَيَحْسَبُ	أَنْ لَّمْ	يَرَهُ	أَحَدٌ ٧ ط	أَلَمْ	نَجْعَلْ	لَّهُ	عَيْنَيْنِ ٨ لا
क्या वो समझता है	कि	नहीं	देखा उसे	किसी एक ने	क्या नहीं	हमने बनाई	उसके लिए दो आंखें

وَلِسَانًا	وَشَفَتَيْنِ ٩ لا	وَهَدَيْنَهُ	النَّجْدَيْنِ ١٠ ج	فَلَا	اِقْتَحَمَ	الْعَقَبَةَ ١١ ط
और एक ज़बान	और दो होंठ	और दिखाए हमने उसे	दोनों रास्ते	पस ना	वो दाख़िल हुआ	घाटी में

وَمَا	أَدْرَاكَ	مَا	الْعَقَبَةُ ١٢ ط	فَكَ	رَقَبَةٍ ١٣ لا	أَوْ	إِطْعَمُ	فِي يَوْمٍ
और क्या चीज़	बताए आपको	कि क्या है	वो घाटी	आज़ाद करना	एक गर्दन का	या	खाना खिलाना	एक दिन में

ذِي مَسْغَبَةٍ ١٤ لا	يَتِيمًا	ذَامَقْرَبَةٍ ١٥ لا	أَوْ	مِسْكِينًا	ذَامَثْرَبَةٍ ١٦ ط
भूख वाले	किसी यतीम	क्राबत वाले को	या	किसी मिसकीन	खाकनशीन को

ثُمَّ كَانَ مِنَ الَّذِينَ آمَنُوا وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ وَتَوَاصَوْا	وَتَوَاصَوْا	وَتَوَاصَوْا	وَتَوَاصَوْا	وَتَوَاصَوْا	وَتَوَاصَوْا	وَتَوَاصَوْا
और एक दूसरे को तलक्रीन की	सब्र करने की	और उन्होंने एक दूसरे को तलक्रीन की	ईमान लाए	उनमें से जो	हो वो	फिर

بِالْبِرِّ وَالْإِيمَانِ أُولَئِكَ أَصْحَابُ الْمَيْمَنَةِ ۖ وَالَّذِينَ كَفَرُوا	بِالْبِرِّ وَالْإِيمَانِ	أُولَئِكَ	أَصْحَابُ الْمَيْمَنَةِ ۖ	وَالَّذِينَ	كَفَرُوا
रहम करने की	यही लोग हैं	दाएँ हाथ वाले	और वो जिन्होंने	कुफ़ किया	

بِأَيِّتِنَا هُمْ أَصْحَابُ الْمَشْأَمَةِ ۖ عَلَيْهِمْ نَارٌ مُّؤَصَّدَةٌ ۖ	بِأَيِّتِنَا	هُمْ	أَصْحَابُ الْمَشْأَمَةِ ۖ	عَلَيْهِمْ	نَارٌ	مُّؤَصَّدَةٌ ۖ
हमारी आयात के साथ	वो हैं	बाएँ हाथ वाले	उन पर	आग होगी	बंद की हुई	

أَيَّاتُهَا: 15	91 سُورَةُ الشُّسِ مَكِّيَّةٌ 26	رُكُوعُهَا: 1
-----------------	----------------------------------	---------------

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

وَالشُّسِ وَضُحَاهَا ۖ وَالْقَبْرِ ۖ إِذَا تَلَّهَا ۖ وَالنَّهَارِ ۖ إِذَا	وَالشُّسِ	وَضُحَاهَا ۖ	وَالْقَبْرِ ۖ	إِذَا	تَلَّهَا ۖ	وَالنَّهَارِ ۖ	إِذَا
कसम है सूरज की	और उसकी धूप की	और चांद की	जब	जब	वो उसके पीछे आए	और दिन की	जब

جَلَّهَا ۖ وَاللَّيْلِ ۖ إِذَا يَغْشَاهَا ۖ وَالسَّيِّءِ ۖ وَمَا بَنَاهَا ۖ	جَلَّهَا ۖ	وَاللَّيْلِ ۖ	إِذَا	يَغْشَاهَا ۖ	وَالسَّيِّءِ ۖ	وَمَا	بَنَاهَا ۖ
वो ज़ाहिर करे उसे	और रात की	जब	वो ढाँप ले उसे	और आसमान की	और उसकी	जिसने बनाया उसे	

وَالْأَرْضِ ۖ وَمَا طَحَّهَا ۖ وَنَفْسٍ ۖ وَمَا سَوَّاهَا ۖ	وَالْأَرْضِ ۖ	وَمَا	طَحَّهَا ۖ	وَنَفْسٍ ۖ	وَمَا	سَوَّاهَا ۖ
और ज़मीन की	और उसकी	जिसने बिछाया उसे	और नफ़्स की	और उसकी	जिसने दुरुस्त किया उसे	

فَالْهَبْهَا ۖ فَجُورَهَا ۖ وَتَقْوَاهَا ۖ قَدْ أَفْلَحَ مَنْ زَكَّاهَا ۖ	فَالْهَبْهَا ۖ	فَجُورَهَا ۖ	وَتَقْوَاهَا ۖ	قَدْ	أَفْلَحَ	مَنْ	زَكَّاهَا ۖ
पस उसने इलहाम की उसे	बदी उसकी	और तक्रवा उसका	यक्रीनन	वो फ़लाह पा गया	जिसने	पाक किया उसे	

وَقَدْ خَابَ مَنْ دَسَّهَا ۖ كَذَّبَتْ ثَمُودُ بِطَغْوَاهَا ۖ إِذْ	وَقَدْ	خَابَ	مَنْ	دَسَّهَا ۖ	كَذَّبَتْ	ثَمُودُ	بِطَغْوَاهَا ۖ	إِذْ
और यक्रीनन	वो नाकाम हुआ	जिसने	दबा दिया उसे	झुठलाया	समूद ने	बवजह अपनी सरकशी के	जब	

اُنْبَعَثَ ۖ أَشْقَاهَا ۖ فَقَالَ لَهُمْ رَسُولُ اللَّهِ ۖ نَاقَةُ اللَّهِ	اُنْبَعَثَ ۖ	أَشْقَاهَا ۖ	فَقَالَ	لَهُمْ	رَسُولُ اللَّهِ ۖ	نَاقَةُ	اللَّهِ
उठा	सबसे बड़ा बदबख़्त उसका	तो कहा	उन्हें	अल्लाह के रसूल ने	ऊंटनी है	अल्लाह की	

وَسُقِيَهَا ¹³	فَكَذَّبُوهُ	فَعَقَرُوهَا ¹⁴	فَدُمِدَمَ	عَلَيْهِمْ	رَبُّهُمْ
और पानी पिलाना है उसे	तो उन्होंने झुठलाया उसे	फिर कूचें काट दीं उसकी	तो हलाकत डाली	उन पर	उनके रब ने

بِذُنُوبِهِمْ	فَسَوَّاهَا ¹⁴	وَلَا	يَخَافُ	عُقُبَهَا ¹⁵
बवजह उनके गुनाहों के	फिर उसने बराबर कर दिया उसे	और नहीं	वो डरता	उसके अंजाम से

آيَاتُهَا: 21	92 سُورَةُ النَّازِعَاتِ مَكِّيَّةٌ 9	رُكُوعُهَا: 1
---------------	---------------------------------------	---------------

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

وَاللَّيْلِ إِذَا يَغْشَى ¹	وَالنَّهَارِ	إِذَا تَجَلَّى ²	وَمَا	خَلَقَ
जब वो छा जाए	और दिन की	जब	वो रौशन हो	और उसकी

الذِّكْرِ	وَالْأُنثَى ³	إِنَّ سَعْيَكُمْ	لَشَتَّى ⁴	فَأَمَّا مَنْ	أَعْطَى
नर	और मादा को	बेशक	कोशिश तुम्हारी	अलबत्ता मुख्तलिफ़ तरह की है	तो रहा वो

وَاتَّقِ ⁵	وَصَدَقَ بِالْحُسْنَى ⁶	فَسَنِيْسِرُهُ	لِلْيُسْرَى ⁷	وَأَمَّا
और उसने तक्रवा किया	और तस्दीक की	भलाई की	पस अनकरीब हम आसानी देंगे उसे	आसान (रास्ते) की

مَنْ بَخِلَ	وَاسْتَغْنَى ⁸	وَكَذَّبَ بِالْحُسْنَى ⁹	فَسَنِيْسِرُهُ
जिसने बुख़ल किया	और उसने बेपरवाई बरती	और उसने झुठलाया	नेकी को

لِلْعُسْرَى ¹⁰	وَمَا يُغْنِي عَنْهُ	مَالُهُ إِذَا تَرَدَّى ¹¹	إِنَّ
मुश्किल (रास्ते) की	और नहीं	काम आएगा	उसे

عَلَيْنَا	لِلْهُدَى ¹²	وَإِنَّ	لَنَا	لِلْآخِرَةِ	وَالْأُولَى ¹³
हमारे ही ज़िम्मे है	यक्रीनन हिदायत देना	और बेशक	हमारे ही इख़्तियार में है	यक्रीनन आखिरत	और पहली (दुनिया)

فَأَنْذَرْتُكُمْ	نَارًا	تَكْظِي ¹⁴	لَا يَصْلُهَا	إِلَّا	الْأَشْقَى ¹⁵	الَّذِي
तो डरा दिया मैंने तुम्हें	एक आग से	जो भड़कती है	ना जलेगा उसमें	मगर	निहायत बदबख़्त	वो जिसने

كَذَّبَ	وَتَوَلَّى ^ط ¹⁶	وَسَيَجْزِيهَا	الْآتِقَى ^{لا} ¹⁷	الَّذِي	يُؤْتِي	مَالَهُ
झुठलाया	और उसने मुंह मोड़ लिया	और अनकरीब बचा लिया जाएगा उससे	निहायत परहेज़गार	वो जो	देता है	माल अपना

يَتَزَكَّى ^ج ¹⁸	وَمَا	لِأَحَدٍ	عِنْدَهُ	مِنْ نِعْمَةٍ	تُجْزَى ^{لا} ¹⁹	إِلَّا
कि वो पाक हो	और नहीं	किसी एक के लिए	उसके पास	कोई नेअमत (एहसान)	(जिसका) बदला दिया जाएगा	सिवाए

ابْتِغَاءَ	وَجْهٍ	رَبِّهِ	الْأَعْلَى ^ج ²⁰	وَلَسَوْفَ	يَرْضَى ^ع ²¹
चाहने के लिए	चेहरा	अपने रब का	जो सबसे बुलंद है	और यकीनन अनकरीब	वो राज़ी हो जाएगा

آيَاتُهَا: 11	93 سُورَةُ الضُّحَى مَكِّيَّةٌ 11	رُكُوعُهَا: 1
---------------	-----------------------------------	---------------

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

وَالضُّحَى ^{لا} ¹	وَاللَّيْلِ	إِذَا	سَجَى ^{لا} ²	مَا	وَدَّعَكَ	رَبُّكَ
क़सम है चाश्त की	और रात की	जब	वो छा जाए	नहीं	छोड़ा आपको	आपके रब ने

وَمَا	قَلَى ^ط ³	وَلِلْآخِرَةِ	خَيْرٌ	لَّكَ	مِنَ الْأُولَى ^ط ⁴	وَلَسَوْفَ
और ना	वो नाराज़ हुआ	और यकीनन आख़िरत	बेहतर है	आपके लिए	पहली (दुनिया) से	और यकीनन अनकरीब

يُعْطِيكَ	رَبُّكَ	فَتَرْضَى ^ط ⁵	أَلَمْ	يَجِدَكَ	يَتِيمًا
अता करेगा आपको	रब आपका	तो आप राज़ी हो जाएंगे	क्या नहीं	उसने पाया आपको	यतीम

فَأَوَى ^ص ⁶	وَوَجَدَكَ	ضَالًّا	فَهَدَى ^ص ⁷	وَوَجَدَكَ	عَائِلًا
फिर उसने ठिकाना फ़राहम किया	और उसने पाया आपको	राह भूला	तो उसने रहनुमाई की	और उसने पाया आपको	तंगदस्त

فَاغْنَى ^ط ⁸	فَأَمَّا	الْيَتِيمَ	فَلَا	تَقْهَرُ ^ط ⁹	وَأَمَّا	السَّائِلَ
तो उसने शनी कर दिया	तो रहा	यतीम	पस ना	आप सख़्ती कीजिए (उस पर)	और रहा	सवाली

فَلَا	تَنْهَرُ ^ط ¹⁰	وَأَمَّا	بِنِعْمَةِ رَبِّكَ	فَحَدَّثْتُ ^ع ¹¹
पस ना	आप झिड़किये (उसे)	और लेकिन	अपने रब की नेअमत को	पस बयान कीजिए

رُكُوعُهَا: 1

94 سُورَةُ اَلَمْ نَشْرَحْ مَكِّيَّةٌ 12

آيَاتُهَا: 8

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلَمْ	نَشْرَحْ	لَكَ	صَدْرَكَ ①	وَوَضَعْنَا	عَنْكَ	وَزُرَكَ ②
क्या नहीं	हमने खोल दिया	आपके लिए	सीना आपका	और उतार दिया हमने	आपसे	बोझ आपका
الَّذِي	انْقَضَ	ظَهَرَكَ ③	وَرَفَعْنَا	لَكَ	ذَكَرَكَ ④	فَإِنَّ
वो जिसने	तोड़ दी थी	कमर आपकी	और बुलंद किया हमने	आपके लिए	ज़िक्र आपका	पस यक़ीनन
مَعَ	الْعُسْرِ	يُسْرًا ⑤	إِنَّ	مَعَ	الْعُسْرِ	يُسْرًا ⑥
साथ	तंगी के	आसानी है	यक़ीनन	साथ	तंगी के	आसानी है
فَرَعْتَ	فَأَنْصَبُ ⑦	وَالِى رَبِّكَ	فَارْغَبُ ⑧			
फ़ारिग हो जाएँ आप	तो मेहनत कीजिए	और तरफ़ अपने रब के	पस रग़बत कीजिए			

رُكُوعُهَا: 1

95 سُورَةُ التِّينِ مَكِّيَّةٌ 28

آيَاتُهَا: 8

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

وَالَّتَيْنِ	وَالزَّيْتُونِ ①	وَطُورِ سَيْنِينَ ②	وَهَذَا	الْبَلَدِ		
क़सम है अंजीर की	और ज़ैतून की	और तूरे सीना की	और इस	शहर		
الْأَمِينِ ③	لَقَدْ	خَلَقْنَا	الْإِنْسَانَ	فِي أَحْسَنِ تَقْوِيمٍ ④	ثُمَّ	
अमन वाले की	अलबत्ता तहकीक़	पैदा किया हमने	इंसान को	बेहतरीन साख़्त में	फिर	
رَدَدْنَاهُ	أَسْفَلَ	سُفْلِينَ ⑤	إِلَّا	الَّذِينَ	أَمَنُوا	وَعَمِلُوا
लौटा दिया हमने उसे	सबसे ज़्यादा निचला	निचलों से	सिवाए	उनके जो	ईमान लाए	और उन्होंने अमल किए
الصَّالِحَاتِ	فَلَهُمْ	أَجْرٌ	غَيْرُ	مَبْنُونٍ ⑥	فَبَا	يُكَذِّبُكَ
नेक	तो उनके लिए	अजर है	ना	ख़त्म होने वाला	तो क्या (आमादा करता है)	झुठलाने पर तुझे

بَعْدُ	بِالدِّينِ ٧	أَلَيْسَ	اللَّهُ	بِأَحْكَمِ	الْحَكِيمِينَ ٨
बाद इस के	बदले (के दिन) को	क्या नहीं है	अल्लाह	बड़ा हाकिम	सब हाकिमों से

اَيَاتُهَا: 19	96 سُورَةُ الْعَلَقِ مَكِّيَّةٌ 1	رُكُوعُهَا: 1
----------------	-----------------------------------	---------------

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ					
---------------------------------------	--	--	--	--	--

إِقْرَأْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِي خَلَقَ ١	خَلَقَ	الْإِنْسَانَ	مِنْ عَلَقٍ ٢
पढ़िए	वो जिसने	पैदा किया	उसने पैदा किया

إِقْرَأْ وَرَبُّكَ الْأَكْرَمُ ٣	الَّذِي عَلَّمَ بِالْقَلَمِ ٤	عَلَّمَ	الْإِنْسَانَ
पढ़िए	सबसे ज़्यादा करम वाला है और रब आपका	सिखाया	इंसान को

مَا لَمْ يَعْلَمْ ٥	كَلَّا	إِنَّ الْإِنْسَانَ لِرَبِّهِ لَكَنَافٍ ٦	أَن
जो	नहीं	वो जानता था	कि

رَأَاهُ	اسْتَغْنَى ٧	إِنَّ إِلَىٰ رَبِّكَ الرُّجْعَى ٨	أَرَأَيْتَ الَّذِي
वो देखता है खुद को	बेनियाज़	बेशक	उस शख्स को जो

يَنْهَى ٩	عَبْدًا	إِذَا صَلَّى ١٠	أَرَأَيْتَ إِنْ كَانَ
रोकता है	एक बंदे को	जब	हो वो

عَلَىٰ الْهُدَى ١١	أَوْ أَمَرَ	بِالتَّقْوَى ١٢	أَرَأَيْتَ إِنْ كَذَّبَ
हिदायत पर	या	वो हुक्म देता हो	उसने झुठलाया

وَتَوَلَّى ١٣	أَلَمْ يَعْلَمْ بِآنَانَ اللَّهِ	يَرَى ١٤	كَلَّا لَئِنْ
और उसने मुंह मोड़ा	क्या नहीं	वो जानता	कि बेशक

لَمْ يَنْتَهُ ١٥	لَنْسَفَعًا	بِالنَّاصِيَةِ ١٥	نَاصِيَةٍ	كَاذِبَةٍ
ना	तो हम ज़रूर घसीटेंगे (उसे)	पेशानी के (बालों से)	पेशानी	जो झूठी है

خَاطِئَةٌ ⑩	فَلْيَدْعُ	نَادِيَهُ ⑪	سَدُّعُ	الزَّبَانِيَةُ ⑫
खताकार है	पस चाहिए कि वो पुकारे	अपनी मजलिस को	अनकरीब हम बुला लेंगे	दोज़ख के फ़रिश्तों को

كَلَّا ط	لَا تُطْعُهُ	وَأَسْجُدْ	وَاقْتَرِبْ ⑬	وَأَقْتَرِبْ ⑭
हरगिज़ नहीं	ना आप इताअत कीजिए उसकी	और सज्दा कीजिए	और कुर्ब हासिल कीजिए	और कुर्ब हासिल कीजिए

آيَاتُهَا: 5	97 سُورَةُ الْقَدْرِ مَكِّيَّةٌ 25	رُكُوعُهَا: 1
--------------	------------------------------------	---------------

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

إِنَّا	أَنْزَلْنَاهُ	فِي لَيْلَةِ الْقَدْرِ ①	وَمَا	أَدْرَاكَ	مَا
बेशक हम	नाज़िल किया हमने उसे	लैलतुल क़द्र में	और क्या चीज़	बताए आपको	क्या है

لَيْلَةِ الْقَدْرِ ②	لَيْلَةِ الْقَدْرِ ③	خَيْرٌ	مِّنْ أَلْفِ شَهْرٍ ④	تَنْزِيلُ
लैलतुल क़द्र	लैलतुल क़द्र	बेहतर है	हज़ार महीनों से	उतरते हैं

الْمَلَائِكَةُ	وَالرُّوحُ	فِيهَا	بِإِذْنِ رَبِّهِمْ ⑤	مِنْ كُلِّ أَمْرٍ ⑥
फ़रिश्ते	और रूह (जिब्रील)	उसमें	अपने रब के इज़्ज़न से	हर काम के लिए

سَلَامٌ ⑦	هِيَ	حَتَّى	مَطْلَعِ	الْفَجْرِ ⑧
सलामती है	वो	यहाँ तक कि	तुलूअ होजाए	फ़ज्र

آيَاتُهَا: 8	98 سُورَةُ الْبَيِّنَةِ مَدَنِيَّةٌ 100	رُكُوعُهَا: 1
--------------	---	---------------

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

لَمْ	يَكُنْ	الَّذِينَ	كَفَرُوا	مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ	وَالْمُشْرِكِينَ
नहीं	थे	वो जिन्होंने	कुफ़ किया	अहले किताब में से	और मुशरिकीन में से

مُنْفَكِّينَ	حَتَّى	تَأْتِيَهُمْ	الْبَيِّنَةُ ①	رَسُولٌ	مِّنَ اللَّهِ
बाज़ आने वाले	यहाँ तक कि	आ जाए उनके पास	वाज़ेह दलील	एक रसूल	अल्लाह की तरफ़ से

يَتْلُوا	صُحُفًا	مُطَهَّرَةً ②	فِيهَا	كُتِبَ	قِيَمَةٌ ③	وَمَا	تَفَرَّقَ
जो पढ़ता है	सहीफ़े	पाकीज़ा	उसमें	तहरीरें हैं	दुरुस्त	और नहीं	तफ़रका किया
الَّذِينَ	أَوْثُوا	الْكِتَابَ	إِلَّا	مِنْ بَعْدِ	مَا	جَاءَتْهُمْ	الْبَيِّنَةُ ④
उन लोगों ने जो	दिए गए	किताब	मगर	बाद इसके	जो	आई उनके पास	खुली दलील
وَمَا	أَمْرًا	إِلَّا	لِيَعْبُدُوا	اللَّهُ	مُخْلِصِينَ	لَهُ	الدِّينَ ⑤
और नहीं	और हुकम दिए गए थे	मगर	ये कि वो इबादत करें	अल्लाह की	ख़ालिस करने वाले	उसके लिए	दीन को
حُنَفَاءَ	وَيُقِيمُوا	الصَّلَاةَ	وَيُؤْتُوا	الزَّكَاةَ	وَذَلِكَ	دِينُ	
यकसू होकर	और वो क़ायम करें	नमाज़	और वो अदा करें	ज़कात	और ये है	दीन	
الْقِيَمَةُ ⑤	إِنَّ	الَّذِينَ	كَفَرُوا	مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ	وَالْمُشْرِكِينَ		
दुरुस्त	बेशक	वो जिन्होंने	कुफ़्र किया	अहले किताब में से	और मुशरिकीन		
فِي نَارٍ	جَهَنَّمَ	خُلْدِينَ	فِيهَا ⑥	أُولَئِكَ	هُمْ	شَرُّ	الْبَرِيَّةِ ⑥
आग में होंगे	जहन्नम की	हमेशा रहने वाले	उसमें	यही लोग हैं	वो	बदतरीन	मख़लूक
إِنَّ	الَّذِينَ	آمَنُوا	وَعَمِلُوا	الصَّالِحَاتِ ⑦	أُولَئِكَ	هُمْ	خَيْرُ
बेशक	वो लोग जो	ईमान लाए	और उन्होंने अमल किए	नेक	यही लोग हैं	वो	बेहतरीन
الْبَرِيَّةِ ⑦	جَزَاؤُهُمْ	عِنْدَ	رَبِّهِمْ	جَنَّتْ	عَدْنٍ	تَجْرِي	
मख़लूक	बदला उनका	पास है	उनके रब के	बागात	हमेशगी के	बहती हैं	
مِنْ تَحْتِهَا	إِلَّا أَنْهَرُ	خُلْدِينَ	فِيهَا	أَبَدًا ⑧	رَضِيَ	اللَّهُ	
उनके नीचे से	नहरें	हमेशा रहने वाले हैं	उन में	हमेशा-हमेशा	राज़ी हो गया	अल्लाह	
عَنْهُمْ	وَرَضُوا	عَنْهُ ⑧	ذَلِكَ	لِسَنِّ	خَشِيَ	رَبَّهُ ⑧	
उनसे	और वो राज़ी हो गए	उससे	ये	उसके लिए जो	डर गया	अपने रब से	

رُكُوعَهَا: 1

99 سُورَةُ الزَّلْزَالِ مَدَنِيَّةٌ 93

آيَاتُهَا: 8

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

إِذَا زُلْزِلَتِ الْأَرْضُ زُلْزَالَهَا ^١	وَأَخْرَجَتِ الْأَرْضُ أَثْقَالَهَا ^٢
जब हिला दी जाएगी	जमीन और निकालेगी

وَقَالَ الْإِنْسَانُ مَا لَهَا ^٣	يَوْمَئِذٍ تُحَدِّثُ أَخْبَارَهَا ^٤
क्या है उसे	वो बयान करेगी खबरें अपनी

بِأَنَّ رَبَّكَ أَوْحَىٰ لَهَا ^٥	يَوْمَئِذٍ يَصْدُرُ النَّاسُ أَشْتَاتًا ^٦
वही की आपके रब ने	लौटेंगे लोग अलग-अलग होकर

لِّيُرَوْا أَعْمَالَهُمْ ^٦	فَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا
आमाल अपने ताकि वो दिखाए जाएं	तो जो कोई अमल करेगा वज़न बराबर ज़र्रे के भलाई के

يَرَهُ ^٧	وَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا
वो देख लेगा उसे और जो कोई अमल करेगा वज़न बराबर ज़र्रे के बुराई के	वो देख लेगा उसे

رُكُوعَهَا: 1

100 سُورَةُ الْعِدَاتِ مَكِّيَّةٌ 14

آيَاتُهَا: 11

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

وَالْعِدَاتِ ضَبْحًا ^١	قَدْحًا ^٢
हांपते हुए	सुम मार कर

صُبْحًا ^٣	فَآثَرْنَ
सुबह सवेरे	फिर वो उड़ते हैं

جَمْعًا ^٥	إِنَّ الْإِنْسَانَ لِرَبِّهِ
जमाअत में	अपने रब का

لَشَهِيدٌ ٧	وَإِنَّهُ	لِحُبِّ	الْخَيْرِ	لَشَدِيدٌ ٨	أَفَلَا
अलबत्ता (खुद) गवाह है	और बेशक वो	मोहब्बत में	माल की	यकीनन शदीद है	क्या भला नहीं

يَعْلَمُ	إِذَا	بُعْثِرَ	مَا	فِي الْقُبُورِ ٩	وَحُصِّلَ	مَا
वो जानता	जब	निकाल लिया जाएगा	जो	कब्रों में है	और हासिल कर लिया जाएगा	जो

فِي الصُّدُورِ ١٠	إِنَّ	رَبَّهُمْ	بِهِمْ	يَوْمَئِذٍ	لَّخَبِيرٌ ١١
सीनों में है	बेशक	रब उनका	उनके बारे में	उस दिन	यकीनन बहुत बाख़बर होगा

آيَاتُهَا: 11	سُورَةُ الْقَارِعَةِ مَكِّيَّةٌ 30	رُكُوعُهَا: 1
---------------	------------------------------------	---------------

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

الْقَارِعَةُ ١	مَا	الْقَارِعَةُ ٢	وَمَا	أَدْرِيكَ	مَا	الْقَارِعَةُ ٣
खटखटाने वाली	क्या है वो	खटखटाने वाली	और क्या चीज़	बताए आपको	कि क्या है वो	खटखटाने वाली

يَوْمَ	يَكُونُ	النَّاسُ	كَالْفَرَاشِ	الْبَثْثِ ٤	وَتَكُونُ	الْجِبَالُ
जिस दिन	हो जाएंगे	लोग	परवानों की तरह	बिखरे हुए	और हो जाएंगे	पहाड़

كَالْعِهْنِ	الْبَنَفُوشِ ٥	فَإِمَّا	مَنْ	ثَقُلَتْ	مَوَازِينُهُ ٦	فَهُوَ
रंगीन रूई की तरह	धुंकी हुई	तो रहा	वो जो	भारी हुए	पलड़े उसके	तो वो

فِي عَيْشَةٍ	رَاضِيَةٍ ٧	وَأَمَّا	مَنْ	خَفَّتْ	مَوَازِينُهُ ٨	فَأُمُّهُ
ज़िंदगी में होगा	पसंदीदा	और रहा	वो जो	हल्के हुए	पलड़े उसके	तो उसकी मां (ठिकाना)

هَآوِيَةٍ ٩	وَمَا	أَدْرِيكَ	مَا هِيَ ١٠	نَارٌ	حَامِيَةٍ ١١
हाविया (जहन्नम) होगी	और क्या चीज़	बताए आपको	क्या है वो	आग है	भड़कती हुई

آيَاتُهَا: 8	سُورَةُ التَّكْوِيْنِ مَكِّيَّةٌ 16	رُكُوعُهَا: 1
--------------	-------------------------------------	---------------

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

اَلْهَكُمُ	التَّكَاثُرُ ①	حَتَّى	زُرْتُمْ	الْمَقَابِرَ ②	كَلَّا	سَوْفَ
गाफ़िल कर दिया तुम्हें	कसरत की तलब ने	यहां तक कि	जा पहुंचे तुम	कब्रों को	हरगिज़ नहीं	अनकरीब

تَعْلَمُونَ ③	ثُمَّ	كَلَّا	سَوْفَ	تَعْلَمُونَ ④	كَلَّا	لَوْ	تَعْلَمُونَ
तुम जान लोगे	फिर	हरगिज़ नहीं	अनकरीब	तुम जान लोगे	हरगिज़ नहीं	काश	तुम जान लेते

عِلْمَ	الْيَقِينِ ⑤	لَتَرَوُنَّ	الْجَحِيمَ ⑥	ثُمَّ	لَتَرَوُنَّهَا	عَيْنَ
जानना	यक़ीन का	अलबत्ता तुम ज़रूर देखोगे	जहन्नम को	फिर	अलबत्ता तुम ज़रूर देखोगे उसे	आंख से

الْيَقِينِ ⑦	ثُمَّ	لَتُسْأَلُنَّ	يَوْمَئِذٍ	عَنِ النَّعِيمِ ⑧
यक़ीन की	फिर	अलबत्ता तुम ज़रूर पूछे जाओगे	उस दिन	नेअमती के बारे में

آيَاتُهَا: 3	سُورَةُ الْعَصْرِ مَكِّيَّةٌ 103	رُكُوعُهَا: 1
--------------	----------------------------------	---------------

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

وَالْعَصْرِ ①	إِنَّ	الْإِنْسَانَ	لَفِي خُسْرٍ ②	إِلَّا	الَّذِينَ	آمَنُوا
क्रसम है ज़माने की	बेशक	इन्सान	यक़ीनन ख़सारे में है	सिवाय	उन लोगों के जो	ईमान लाए

وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ	وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ ④	وَتَوَاصَوْا	بِالصَّبْرِ ③
और उन्होंने अमल किए	और एक दूसरे को तलक़ीन की	हक़ की	सब्र की

آيَاتُهَا: 9	سُورَةُ الْهُزَّةِ مَكِّيَّةٌ 104	رُكُوعُهَا: 1
--------------	-----------------------------------	---------------

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

وَيْلٌ	لِّكُلِّ	هُزْءٍ	لُّمَزَةٍ ①	الَّذِي	جَمَعَ	مَالًا
हलाकत है	वास्ते हर	ऐब लगाने वाले	ज़िबत करने वाले के	वो जिसने	जमा किया	माल

وَعَدَدَهُ ②	يَحْسَبُ	أَنَّ	مَالَهُ	أَخْلَدَهُ ③	كَلَّا
और उसने गिन-गिन कर रखा उसे	वो समझता है	कि बेशक	माल उसका	हमेशगी बख़्शेगा उसे	हरगिज़ नहीं

لِيُنْزِلَنَّ	فِي الْحُطْبَةِ ④	وَمَا	أَدْرُكَ	مَا	الْحُطْبَةُ ⑤
अलबत्ता वो ज़रूर डाला जाएगा	हुतामा में	और क्या चीज़	बताए आपको	क्या है	हुतामा

نَارُ	اللَّهِ	الْمُوقَدَّةُ ⑥	الَّتِي	تَطْلُعُ	عَلَى الْآفِئْدَةِ ⑦
आग है	अल्लाह की	भड़काई हुई	वो जो	चढ़ आती है	दिलों पर

إِنَّهَا	عَلَيْهِمْ	مُؤَصَّدَةٌ ⑧	فِي عَمَدٍ	مُمَدَّدَةٍ ⑨	ع
बेशक वो	उन पर	बंद की हुई है	सुतनों में	लम्बे-लम्बे	

آيَاتُهَا: 5	سُورَةُ الْفِيلِ مَكِّيَّةٌ 19	رُكُوعُهَا: 1
--------------	--------------------------------	---------------

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

أَلَمْ	تَرَ	كَيْفَ	فَعَلَ	رَبُّكَ	بِأَصْحَابِ الْفِيلِ ①
क्या नहीं	आपने देखा	किस तरह	किया	आपके रब ने	हाथी वालों के साथ

أَلَمْ	يَجْعَلْ	كَيْدَهُمْ	فِي تَضَلُّيلٍ ②	وَأَرْسَلَ	عَلَيْهِمْ
क्या नहीं	उसने कर दिया था	उनकी चाल को	बेकार/अकारत	और उसने भेजे	उन पर

طَيْرًا	أَبَابِيلَ ③	تَرْمِيهِمْ	بِحِجَارَةٍ	مِّنْ سِجِّيلٍ ④	ط
परिंदे	झुंड के झुंड	जो फेंकते थे उन पर	पत्थर	कंकर की (क्रिस्म) के	

فَجَعَلَهُمْ	كَعَصْفٍ	مَّا كُولٍ ⑤	ع
तो उसने कर दिया उन्हें	भूसे की तरह	खाए हुए	

آيَاتُهَا: 4	سُورَةُ قُرَيْشٍ مَكِّيَّةٌ 29	رُكُوعُهَا: 1
--------------	--------------------------------	---------------

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

لَا يَلِفُ	قُرَيْشٍ ①	الْفِهِمُ	رِحْلَةَ	الشِّتَاءِ	وَالصَّيْفِ ②
मानूस करने के लिए	कुरैश को	मानूस करना उन्हें	सफ़र से	सर्दी के	और गर्मी के

1
ع
4
31

فَلْيَعْبُدُوا	رَبَّ	هَذَا	الْبَيْتِ ③	الَّذِي	أُطْعِمَهُمْ
पस चाहिए कि वो इबादत करें	रब की	उस	घर के	जिसने	खिलाया उन्हें
مِّنْ جُوعٍ ④	وَأَمَنَهُمْ	مِّنْ خَوْفٍ ④			
भूख में	और उसने अमन दिया उन्हें	खौफ़ से			

آيَاتُهَا: 7	سُورَةُ الْبَاعُونَ مَكِّيَّةٌ 17	رُكُوعُهَا: 1
--------------	-----------------------------------	---------------

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ					
---------------------------------------	--	--	--	--	--

أَرَأَيْتَ	الَّذِي	يُكَذِّبُ	بِالدِّينِ ①	فَذَلِكِ	الَّذِي
क्या देखा आपने	उस शख्स को जो	झुठलाता है	बदले (के दिन) को	पस ये	वो है जो

يَدْعُ	الْيَتِيمَ ②	وَلَا	يَحْضُ	عَلَى طَعَامٍ	الْمِسْكِينَ ③
धक्के देता है	यतीम को	और नहीं	वो रसबत दिलाता	खाना खिलाने पर	मिस्कीन के

فَوَيْلٌ	لِّلْمَصَلِّينَ ④	الَّذِينَ	هُمْ	عَنْ صَلَاتِهِمْ	سَاهُونَ ⑤
पस हलाकत है	उन नमाज़ियों के लिए	वो जो	वो	अपनी नमाज़ों से	शाफ़िल हैं

1
ع
7
32

الَّذِينَ	هُمْ	يُرَاءُونَ ⑥	وَيَسْنَعُونَ	الْبَاعُونَ ⑦	ع
वो लोग जो	वो	वो रियाकारी करते हैं	और वो रोकते हैं	इस्तिमाल की मामूली चीजें	

آيَاتُهَا: 3	سُورَةُ الْكَوْثَرِ مَكِّيَّةٌ 15	رُكُوعُهَا: 1
--------------	-----------------------------------	---------------

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ					
---------------------------------------	--	--	--	--	--

إِنَّا	أَعْطَيْنَاكَ	الْكَوْثَرَ ①	فَصَلِّ	لِرَبِّكَ	وَانْحَرْ ②
बेशक हम	अता की हमने आपको	कौसर	पस नमाज़ पढ़िए	अपने रब के लिए	और कुर्बानी कीजिए

1
ع
3
33

إِنَّ	شَانِعَكَ	هُوَ	الْأَبْتَرُ ③	ع	
बेशक	दुश्मन आपका	वो ही	जड़ कटा है		

18	سُورَةُ الْكَافِرُونَ مَكِّيَّةٌ	6	آيَاتُهَا:
----	----------------------------------	---	------------

رُكُوعُهَا: 1

109 سُورَةُ الْكَافِرُونَ مَكِّيَّةٌ 18

آيَاتُهَا: 6

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

قُلْ	يَا أَيُّهَا الْكَافِرُونَ ①	لَا أَعْبُدُ	مَا	تَعْبُدُونَ ②	وَلَا أَنْتُمْ
کھ دیجیے	اے	کافرو	نہیں میں عبادت کرتا	جسکی	تو

عِبْدُونَ	مَا	أَعْبُدُ ③	وَلَا	أَنَا	عَابِدُ	مَا	عَبَدْتُمْ ④
عبادت کرنے والے	جسکی	میں عبادت کرتا ہوں	اور	میں	عبادت کرنے والا ہوں	جسکی	تو

وَلَا أَنْتُمْ	عِبْدُونَ	مَا	أَعْبُدُ ⑤	لَكُمْ	دِينُكُمْ	وَلِي	دِينِ ⑥
اور	تو	عبادت کرنے والے	جسکی	میں عبادت کرتا ہوں	تو	اور	میرا

3	سُورَةُ النَّصْرِ مَدَنِيَّةٌ	114	رُكُوعُهَا: 1
---	-------------------------------	-----	---------------

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

إِذَا	جَاءَ	نَصْرُ	اللَّهِ	وَالْفَتْحُ ①	وَرَأَيْتَ	النَّاسَ
جب	آ جاے	مدد	اللہ کی	اور فتح	اور آپ	لوگوں کو

يَدْخُلُونَ	فِي دِينِ	اللَّهِ	أَفْوَاجًا ②	فَسَبِّحْ	بِحَمْدِ
وہ داخل ہو رہے ہیں	دین میں	اللہ کے	گروہ در گروہ	تسبیح کیجیے	ساتھ حمد کے

رَبِّكَ	وَاسْتَغْفِرْهُ ③	إِنَّهُ	كَانَ	تَوَّابًا ④
اپنے رب کی	اور بخشیش مانگیے اسے	بے شک وہ	ہے وہ	بہت توبہ قبول کرنے والا

5	سُورَةُ اللَّهِبِ مَكِّيَّةٌ	6	رُكُوعُهَا: 1
---	------------------------------	---	---------------

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

تَبَّتْ	يَدَا	أَبِي لَهَبٍ	وَتَبَّ ①	مَا	أَغْنَى	عَنْهُ	مَالُهُ
ٹوٹ	دونوں	ابو لہب کے	اور وہ ہلاک ہوا	نا	کام	اسے	مال

وَمَا كَسَبَ ٢	سَيَصِلُ	نَارًا	ذَاتَ لَهَبٍ ٣	وَأُمْرَأَتُهُ ٤
और जो	उसने कमाया	अनकरीब वो जलेगा	आग में	शोले वाली
और उसकी बीवी				

حَمَالَةً	الْحَطَبِ ٤	فِي جِيدِهَا	حَبْلٌ	مِّن مَّسَدٍ ٥
उठाने वाली	लकड़ी के गट्टे को	उसकी गर्दन में	रस्सी होगी	बटी हुई

آيَاتُهَا: 4	سُورَةُ الْإِخْلَاصِ مَكِّيَّةٌ 22	رُكُوعُهَا: 1
--------------	------------------------------------	---------------

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

قُلْ	هُوَ	اللَّهُ	أَحَدٌ ١	اللَّهُ	الصَّمَدُ ٢	لَمْ	يَلِدْ ٣
कह दीजिए	वो	अल्लाह	एक है	अल्लाह	बेनियाज़ है	ना	उसने जना

وَلَمْ	يُولَدْ ٣	وَلَمْ	يَكُنْ	لَّهُ	كُفُوًا	أَحَدٌ ٤
और ना	वो जना गया	और नहीं	है	उसके लिए	बराबर का	कोई एक भी

آيَاتُهَا: 5	سُورَةُ الْفَلَقِ مَكِّيَّةٌ 20	رُكُوعُهَا: 1
--------------	---------------------------------	---------------

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

قُلْ	أَعُوذُ	بِرَبِّ	الْفَلَقِ ١	مِنْ شَرِّ	مَا	خَلَقَ ٢
कह दीजिए	मैं पनाह लेता हूं	रब की	सुबह के	हर उस चीज़ के शर से	जो	उसने पैदा की

وَمِنْ شَرِّ	غَاسِقٍ	إِذَا	وَقَبَ ٣	وَمِنْ شَرِّ	النَّفَّاثِ
और शर से	अंधेरी रात के	जब	वो फैल जाए	और शर से	फूँखने वालियों के

فِي الْعُقَدِ ٤	وَمِنْ شَرِّ	حَاسِدٍ	إِذَا	حَسَدَ ٥
गिरहों में	और शर से	हासिद के	जब	वो हसद करे

آيَاتُهَا: 6	سُورَةُ النَّاسِ مَكِّيَّةٌ 21	رُكُوعُهَا: 1
--------------	--------------------------------	---------------

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

قُلْ	أَعُوذُ	بِرَبِّ	النَّاسِ ①	مَلِكِ	النَّاسِ ②
कह दीजिए	मैं पनाह लेता हूँ	रब की	इंसानों के	बादशाह की	इंसानों के
إِلَهُ	النَّاسِ ③	مِنْ شَرِّ	الْوَسْوَاسِ	الْخَنَاسِ ④	الَّذِي
इलाह की	इत्सानों के	शर से	वसवसा डालने वाले के	बार बार पलट कर आने वाले के	वो जो
يُوسُوسُ	فِي صُدُورِ	النَّاسِ ⑤	مِنَ الْجَنَّةِ	وَالنَّاسِ ⑥	
वसवसा डालता है	सीनों में	लोगों के	जिन्नों में से	और इंसानों में से	